हिंदी पाठ्यपुस्तक-7

1. कर्मवीर

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–**

विघ्न, चंचल, मरुभूमि, जलराशि, गरम, बेड़ा, बिताते, चुराते।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. जो व्यक्ति समय पर काम नहीं करते, आलस दिखाते हैं; और आज का काम कल पर टालते हैं, वे जीवन में, बाद में पछताते हैं।
2. 'कर्मवीर' व्यक्ति (परिश्रमी लोग) कठिन से कठिन काम को देखकर भी नहीं घबराते और न ही उकताते हैं।
3. कर्मवीर अपनी मेहनत और लगन से जंगल में भी मंगल कर देते हैं, यानि वे सुनसान या कठिन जगहों को भी खुशहाल और उपयोगी बना देते हैं।
4. कर्मवीर मरुभूमि (रेगिस्तान) में भी अपनी मेहनत से नदियाँ बहा देते हैं, अर्थात् वे असंभव कार्य को भी संभव कर दिखाते हैं।
5. जो लोग कामचोर होते हैं और जिसमें इच्छाशक्ति की कमी होती है, वे अक्सर काम करने के बजाय अपना समय व्यर्थ की बातों और गप्पों में नष्ट कर देते हैं।

- **लिखित**

1. भाग्य पर भरोसा रखने वाले व्यक्ति अक्सर आलसी और निरुत्साही हो जाते हैं। वे अपनी असफलताओं के लिए भाग्य को दोष देते हैं और हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते हैं। ऐसे व्यक्तियों का जीवन प्रगतिहीन होता है और वे जीवन की चुनौतियों का सामना करने के बजाय उनसे भागते हैं, जिससे उन्हें बाद में पछताना पड़ता है।
2. कविता के आधार पर सफलता का मूल परिश्रम, धैर्य, दृढ़ निश्चय और परोपकार में निहित है।
   - पथ की पहचान : इस कविता के अनुसार, जीवन के मार्ग में आने वाली बाधाओं (विघ्नबाधा) से विचलित न होकर, निरंतर आगे बढ़ते रहना और अपने 'पथ' को सचेत होकर चुनना ही सफलता का मूल है।
   - मनुष्यता : इसके अनुसार, स्वार्थ का त्याग करके दूसरों की भलाई (परोपकार) के लिए जीना और दया-करुणा का भाव रखना ही 'सच्ची मनुष्यता' और सफलता है।
   - कर्म और निरंतरता : सफलता रातों-रात नहीं मिलती, यह धैर्य और निरंतरता से पैदा होती है।
3. जो व्यक्ति साहसी, कर्मठ और अपने काम के प्रति समर्पित होते है, वे सदा उन्नति करते हैं। ऐसे व्यक्ति आलस्य को त्यागकर अपनी पूरी ऊर्जा अपने लक्ष्य को पाने में लगा देते हैं।
4. कर्मवीर अपनी मेहनत और लगन से कठिन से कठिन कार्यों को भी आसान बनाकर दूसरों के लिए प्रेरणा बनते हैं। वे अपनी सफलता से यह सिद्ध कर देते हैं कि दृढ़ इच्छा शक्ति से किसी भी बाधा को पार किया जा सकता है।
5. कर्मवीर स्वाभिमानी और आत्मनिर्भर होते हैं वे अपनी योग्यता और बाहुबल पर विश्वास रखते हैं, इसलिए वे दूसरों से माँगने या उनके आश्रित रहने के बजाय अपना रास्ता खुद बनाना पसंद करते हैं।

- **अपनी समझ से**

सही विकल्प

1. (घ) 2. (ग)
3. (ख) 4. (ग)
5. (क)

- **सोच-समझकर**

1. जो व्यक्ति अपना समय व्यर्थ नहीं गँवाते, वे अपने लक्ष्यों को समय पर पूरा कर पाते हैं।

समय का सदुपयोग करने से व्यक्ति सफलता प्राप्त करता है, समाज में सम्मान पाता है और राष्ट्र की उन्नति में योगदान देता है। आलस्य न करने से मानसिक और आर्थिक समृद्धि भी प्राप्त होती है।

2. कर्मवीरों को उनके दृढ़ संकल्प, अटूट आत्म विश्वास और परिश्रम करने की इच्छाशक्ति से प्रेरणा मिलती है। वे बाधाओं से घबराते नहीं हैं और 'भाग्य' के भरोसे बैठने के बजाय 'कर्म' में विश्वास रखते हैं। उनकी यही कर्तव्यनिष्ठा उन्हें कठिन से कठिन कार्य करने के लिए प्रेरित करती है।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. **आशय—** इन पंक्तियों का अर्थ है कि सच्चे कर्मवीर कभी भी भाग्य (किस्मत) के भरोसे बैठकर अपना समय नष्ट नहीं करते। यदि वे असफल होते हैं, तो वे अपनी किस्मत को दोष देकर दुखी नहीं होते, बल्कि और मेहनत करते हैं। कार्य चाहे कितना भी चुनौतीपूर्ण या कठिन क्यों न हो वे उसे बीच में नहीं छोड़ते और न ही उससे ऊबते (उकताते) हैं।
2. **आशय—** यह पक्ति कर्मवीरों की तत्परता को दर्शाती है। वे 'कल' पर काम तालने में विश्वास नहीं रखते। वे वर्तमान क्षण के महत्व को समझते हैं और जो काम आज किया जाना चाहिए, उसे पूरी निष्ठा के साथ आज ही संपन्न करते हैं।

- **रिक्त-स्थान**

1. नमूना 2. फूले-फले
3. नभ-तल 4. काम
5. गँवाते

सही मिलान

1. (iv) 2. (iii)
3. (v) 4. (ii)
5. (i)

- **पाठ से आगे**

मन के विचार

1. मेरे विचार में कर्म श्रेष्ठ है। भाग्य केवल उनके अवसरों का द्वार खोल सकता है, लेकिन उन अवसरों को सफलता में बदलने के लिए निरंतर मेहनत और कर्म की आवश्यकता होती है। कर्म ही हमारे भविष्य का निर्माण करता है और हमें आत्मनिर्भर बनाता है।
2. मैं अपने जीवन में ईमानदारी, धैर्य और अनुशासन जैसे गुणों को अपनाना चाहूँगा। ये गुण न केवल चरित्र को मजबूत बनाते हैं, बल्कि कठिन समय में सही निर्णय लेने और अपने लक्ष्यों के प्रति केन्द्रित रहने में भी मदद करते हैं।
3. किसी भी कार्य में सफलता पाने के लिए निम्नलिखित बातें आवश्यक हैं—

▪ **स्पष्ट लक्ष्य—**आपको पता होना चाहिए कि आप क्या हासिल करना चाहते हैं।
▪ **कठोर परिश्रम—**बिना मेहनत के कुछ भी संभव नहीं होता है।
▪ **दृढ़ संकल्प और धैर्य—**असफलताओं से डरे बिना आगे बढ़ते रहना चाहिए।
▪ **सही योजना—**कार्य को व्यवस्थित तरीके से पूरा करने के लिए एक अच्छी रणनीति होनी चाहिए।

- **भाषा-आधारित**

1. **तत्सम रूप—**

(क) भाग्य/भाग (ख) अष्ट
(ग) प्रहर (घ) अग्नि

2. **मुहावरों के अर्थ वाक्य प्रयोग—**

(क) अर्थ— बहुत कम समय में/तुरंत।
वाक्य प्रयोग— साहिल ने एक ही आन में सारा काम खत्म कर दिया।

(ख) अर्थ— उन्नति करना/समृद्ध होना।
वाक्य प्रयोग— मेहनत करने वाले लोग हमेशा फलते-फूलते हैं।

(ग) अर्थ— दूसरों पर निर्भर रहना/किसी की सहायता की प्रतिक्षा करना।
वाक्य प्रयोग— स्वाभिमानी व्यक्ति कभी किसी का मुँह नहीं ताकता।

(घ) अर्थ— बहाने बनाना।
वाक्य प्रयोग— जब मैंने उससे अपनी किताब माँगी, तो वह बाते बनाने लगा।

(ड) अर्थ— काम से बचने की कोशिश करना/आलस करना।

वाक्य प्रयोग— यदि सफल होना है, तो पढ़ाई से जी चुराना छोड़ दो।

3. **स्त्रीलिंग**—लताएँ, बाधा, नदी, बात।
   पुल्लिंग—चित्र, जंगल।
4. **उपसर्ग और प्रत्यय का प्रयोग—**
   ऐसे शब्द लिखने में उपसर्ग और प्रत्यय दोनों का प्रयोग हुआ हो। उदाहरण के लिए: पर + अधीन + ता = पराधीनता।
   इसी प्रकार : 6 शब्द
   1. अपमानित (अप + मान + इत)
   2. निर्बलता (निर् + बल + ता)
   3. असफलता (अ + सफल + ता)
   4. बेचैनी (बे + चैन + ई)
   5. परोपकारी (प + उपकार + ई)
   6. सम्मानित (सम् + मान + इत)

- **क्रियाकलाप आधारित—**

1. **जीवन में कर्मवीरता का महत्व**—जीवन में कर्मवीरता का बहुत अधिक महत्व है। एक कर्मवीर व्यक्ति बाधाओं से घबराता नहीं है, बल्कि अपनी मेहनत और दृढ़ संकल्प से कठिन से कठिन कार्य को भी पूरा करता है। (कर्मवीरता हमें आलस त्यागकर निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है और समाज में सम्मान दिलाती है।

2-4. छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

2. कला का सम्मान

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–**

हस्तकला, प्रदर्शनी, आर्टिस्ट, प्रदर्शित, अद्‌भुत, उपस्थित, दस्तक, प्रतिभाशाली।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. विद्यालय के वार्षिकोत्सव में मुख्य अतिथि के रूप में मंत्री महोदय सुभद्रा देवी आई थीं।
2. विद्यालयों की दीवारों और मंच पंडाल में लोककला के चित्र कंचन ने बनाए थे।
3. मुख्य अतिथि यह देखकर आश्चर्य चकित थीं कि इतनी कम उम्र की बच्ची (कंचन) ने इतने सुन्दर और परिपक्व चित्र बनाए हैं।
4. प्रिसंपल महोदय ने कंचन को पचास चित्र बनाने और उन्हें दो महीने के समय में पूरा करने का लक्ष्य दिया।
5. कंचन के पिताजी प्रदर्शनी में पचास रुपये में एक चित्र खरीदकर लाए थे।

- **लिखित**

1. विद्यालय में सजावट वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में की गई थी।
2. कंचन ने चित्र बनाना अपनी दादी से सीखा था। वह अपनी दादी को लोककला के चित्र बनाते हुए ध्यान से देखती थी और धीरे-धीरे उसने स्वयं भी सुन्दर चित्र बनाना सीख लिया।
3. कंचन के पिता बेटी को बोझ समझते थे। वे सोचते थे कि कंचन को बारहवीं तक पढ़ाकर उसका विवाह कर दूँगा। बस, बेटी के बोझ से मुक्त हो जाऊँगा।
4. प्रदर्शनी के चित्र बनाने में कंचन की मदद उसके प्रधानाचार्य (प्रिंसिपल) और शिक्षकों ने की। उन्होंने उसे आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराई और उसका उत्साह वर्धन किया ताकि वह समय पर अपने चित्र पूरे कर सके।
5. पाठ के अंत में जब कंचन के पिता ने ही अनजाने में अपनी बेटी द्वारा बनाया गया चित्र सबसे अधिक कीमत में खरीद लिया, तो यह देखकर सभी लोग ठहाका लगाकर हँस पड़े।

- **अपनी समझ से**

सही विकल्प

1. (घ) 2. (ग)
3. (ख) 4. (क)
5. (ग)

- **सोच-समझकर**

1. इस कथन का निहितार्थ यह है कि कंचन अपनी प्रतिभा का मूल्य जानती थी। उसे यह सुनकर हँसी आ गई कि उसकी मेहनत और कला का मूल्य केवल पचास रुपये लगाया गया है, जो उसकी क्षमता के सामने बहुत कम था।
2. इस कथन से नंदाकिशोर के आश्चर्य और गर्व का बोध होता है। उन्हें पहले कंचन की असाधारण कलात्मक क्षमता का ज्ञान नहीं था। जब उन्होंने प्रदर्शनी में उसकी कला की सराहना होते देखी, तब उन्हें उसकी असली प्रतिभा का पता चला।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. **आशय**—यह पंक्ति कला के प्रति संकुचित सोच को दर्शाती है। इसका अर्थ है कि उस समय या उस व्यक्ति की नजर में कला (जैसे चित्रकारी) सीखना फिजूल खर्ची थी और स्कूल के पैसों का उपयोग केवल पारंपरिक पढ़ाई के लिए होना चाहिए था।
2. **आशय**—यहाँ कम समय में अधिक काम करने की चुनौती या किसी की कार्यक्षमता पर संदेह व्यक्त किया गया है। यह चित्रों की संख्या और उपलब्ध समय के बीच के संतुलन को बताता है।
3. **आशय**—यह पंक्ति एक सकारात्मक संकल्प को दर्शाती है। वक्ता कंचन की काबिलियत को पहचानते हुए उसे आगे बढ़ने और पढ़ने के लिए हर संभव सहयोग देने का भरोसा दिला रहा है।

- **किसने किससे कहा**

1. किसने कहा—कंचन ने
   किससे कहा—अपने पिताजी से
2. किसने कहा—कंचन के पिता ने
   किससे कहा—कंचन से
3. किसने कहा—कंचन ने
   किससे कहा—प्रिंसिपल जी से
4. किसने कहा—कंचन की माँ ने
   किससे कहा—कंचन के पिता से
5. किसने कहा—कंचन ने
   किससे कहा—अपने पिता से

- **रिक्त-स्थान**

1. चौथ 2. आर्टिस्ट
3. चित्र 4. पचास
5. आर्टिस्ट

- **पाठ से आगे**

मन के विचार

1. अगर मैं कंचन के स्थान पर होता, तो मैं अपने पिताजी को अपनी कला के प्रति लगन और रुचि के बारे में बताता। मैं उन्हें विश्वास दिलाता कि चित्रकारी भी एक सम्मानित पेशा है और मैं इसमें मेहनत करके उनका नाम रोशन कर सकता हूँ।
2. यह कथन समाज में व्याप्त 'बाल विवाह' और लैंगिक भेदभाव' जैसी सामाजिक बुराइयों की ओर संकेत करता है, जहाँ लड़कियों की शिक्षा और उनके सपनों के बजाय उनकी शादी को अधिक महत्व दिया जाता है।
3. हाँ, मैं इस विचार से पूरी तरह सहमत हूँ। दिखावे के लिए किया गया खर्च केवल अहंकार की संतुष्टि करता है। उस धन का उपयोग किसी की शिक्षा, स्वास्थ्य या समाज के भले के लिए करना कहीं अधिक सार्थक है।

- **भाषा-आधारित**

समानार्थी शब्द—

(क) काम—कार्य
(ख) दरवाजे—द्वार
(ग) दीया—दीपक
(घ) अच्छी—बेहतरीन
(ङ) विवाह—शादी/ब्याह

उपसर्गों से नए शब्द—

(क) सु—सुपुत्र, सुगम

(ख) अ—अज्ञान, अधर्म

(ग) वि—विशेष, विज्ञान

(घ) उप—उपकार, उपवन

शुद्ध वाक्य—

(क) सब लोग जोर से हँस पड़े।

(ख) उन्हें अचानक आया देखकर सब चकित हो गए।

(ग) चित्र बनाने का सामान लाने से मना कर दिया।

(घ) कुछ चित्र खरीदने की इच्छा प्रकट की।

- **क्रियाकलाप आधारित–**

1. छात्र स्वयं करें।
2. एक सफल चित्रकार बनने के लिए मैं निम्नलिखित तैयारियाँ करूँगा/करूँगी।

- नियमित रूप से रेखाचित्र बनाने का अभ्यास करना।
- विभिन्न रूप के रंगों (जल रंग, तैल रंग, पेंसिल रंग) के उपयोग की तकनीक सीखना।
- महा चित्रकारों की कलाकृतियों का अध्ययन करना और उनसे प्रेरणा लेना।
- अपनी कल्पनाशीलता को बढ़ाना और नई चीजों को कागज पर उतारने की कोशिश करना।

उद्देश्य और विधेय

	उद्देश्य	***विधेय***
(क)	मंच भाषण शुरू किया	सुभद्रा देवी ने
	उद्देश्य	***विधेय***
(ख)	पचास	कंचन ने
	उद्देश्य	***विधेय***
(ग)	नंदकिशोर को प्रिंसीपल	अपनी गलती पर पश्चाताप हुआ?
	उद्देश्य	***विधेय***
(घ)	चन्द्रमोहन ने	कंचन की पीठ थपथपाई।

- **खेल-आधारित**

रंगों के नाम—

गेरुआ, नारंगी, केसरिया, फिरोजी, नीला, लाल, सलेटी, खाकी, गुलाबी, हरा, जामुनी, बैंगनी।

3. तोत्तोचान

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–**

द्विशाखा, यासुकी-चान, तोत्तोचान, कोशिश, सम्मान, सुस्वागत, रुलाई, आमंत्रित।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. तोत्तो-चान और यासुकी चान के माता-पिता को इस बात का पता नहीं था कि वे दोनों स्कूल के मैदान के एक पेड़ पर चढ़ने की योजना बना रहे थे।
2. उसे बहुत ही शिष्टता से पूछना पड़ता था, "क्या मैं अन्दर आ जाऊँ?
3. यासुकी-चान के उदास होने का कारण यह था कि पोलियो के कारण वह खुद अपने आप पेड़ पर नहीं चढ़ सकता था।
4. जब यासुकी-चान को सीढ़ी पर चढ़ाने की उसकी सारी मेहनत बेकार लग रही थी और यासुकी-चान उदास था, तब उसे लगा कि शायद वह उसे पेड़ पर नहीं चढ़ा पाएगी, इसलिए उसकी रुलाई फूट पड़ने को हुई।
5. सीढ़ी के ऊपर पहुँचने के बाद समस्या यह थी कि यासुकी चान को सीढ़ी से पेड़ की द्विशाखा (दो शाखाओं के मिलन स्थल) तक कैसे पहुँचाया जाए।

- **लिखित**

1. तोमोए में हर बच्चा बाग के एक-एक पेड़ को अपने खुद के चढ़ने का पेड़ मानता था। वे उसे अपनी निजी सम्पत्ति समझते थे और उस पर चढ़ने के लिए किसी और से अनुमति लेना जरूरी मानते थे।
2. यासुकी चान को पोलियो था, जिसके कारण वह न तो किसी पेड़ पर चढ़ सकता था और न ही किसी पेड़ को अपना निजी पेड़ बना सकता था।
3. तोत्तो-चान ने अपने माता-पिता को बिना बताए यासुकी-चान को पेड़ पर चढ़ाने का निश्चय किया। उसने अपनी पूरी ताकत लगाकर और एक भारी तिपाई सीढ़ी को घसीट कर पेड़ तक पहुँचाया, जो एक छोटे बच्चे के लिए काफी जोखिम भरा और मुश्किल काम था।
4. जब यासुकी-चान सीढ़ी से पेड़ पर नहीं चढ़ पाया तो तोत्तो-चान ने हार नहीं मानी। वह चौकीदार के छप्पर से एक तिपाई सीढ़ी घसीटकर लाई ताकि उसे सहारा मिल सके और वह सुरक्षित तरीके से ऊपर पहुँच सके।
5. तोत्तो-चान चाहती थी कि उसका मित्र यासुकी-चान भी वह खुशी और अनुभव प्राप्त करें जो अन्य बच्चे पेड़ पर चढ़कर करते थे। यासुकी-चान शारीरिक अक्षमता के कारण कभी पेड़ पर नहीं चढ़ा था, इसलिए तोत्तो-चान ने उसे दुनिया को एक नए नजरिये से दिखाने के लिए यह अथक प्रयास किया।

- **अपनी समझ से**

सही विकल्प

1. (घ) 2. (ग)
3. (ख) 4. (ग)
5. (घ)

- **सोच-समझकर**

1. अनुभवों में अंतर—

- **तोत्तो-चान**—उसे एक जोखिम भरा काम पूरा करने और अपने दोस्त की मदद करने से आत्म संतुष्टि मिली होगी। उसने पहली बार दुनिया को एक अलग नजरिये (पेड़ की ऊँचाई) से देखा।
- **यासुकी-चान**—शारीरिक अक्षमता के बावजूद उसने पहली बार पेड़ पर चढ़ने का सुख पाया। उसके लिए यह एक ऐसी दुनिया का अनुभव था जिसे उसने पहले कभी नहीं जाना था।

2. **अंतिम मौका**—लेखिका ने ऐसा इसलिए कहा होगा क्योंकि पोलियो से ग्रस्त यासुकी-चान के लिए इतनी मेहनत और जोखिम उठाकर दोबारा पेड़ पर चढ़ना शायद मुमकिन न होता। यह दुर्लभ और साहसी अवसर था जो तोत्तो-चान की मदद से ही संभव हो पाया।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. **आशय**—जब हम झूठ बोलते हैं, तो पकड़े जाने के डर से नजरें मिलाने में कतराते हैं। तोत्तो-चान ने अपनी माँ से झूठ कहा था कि वह यासुकी-चान के घर जा रही है, इसलिए वह अपनी घबराहट छिपाने के लिए अपनी नजरें नीचे झुकाए हुए थी।
2. **आशय**—तो-तो-चान और यासुकी चान जानते थे कि उनका यह प्रयास जोखिम भरा है। अगर वे बड़ों को बताते हैं, तो उन्हें डाँट पड़ती या उन्हें रोक दिया जाएगा, इसलिए इस साहसी 'मिशन' को उन्होंने एक गुप्त रहस्य ही रखा।

- **रिक्त-स्थान**

1. यासुकी-चान
2. कोशिश
3. स्वागत
4. धकियाने
5. सीढ़ी

- **सत्य-असत्य**

1. (✗) 2. (✓)
3. (✗) 4. (✓)
5. (✓)

- **पाठ से आगे**

मन के विचार

1. **(क) परिवर्तन का कारण**—शुरू में तोत्तो-चान और यासुकी चान भीषण गर्मी में पेड़ पर चढ़ने का कठिन परिश्रम कर रहे थे, इसलिए वे पसीने में भीग गए थे।

   (ख) प्रकृति का सहयोग—उनकी मेहनत और लगन को देखकर शायद प्रकृति को उन पर दया आ गई। इसलिए तपतीधूप के बीच अचानक से बादल का एक टुकड़ा आया और उन्हें छाया प्रदान करने लगा, जिससे उन्हें राहत मिली। यह परिवर्तन उनके अथक प्रयास और दृढ़ निश्चय के कारण संभव हुआ।

2. यह व्यक्तिगत विचार वाला प्रश्न है। आप इसका उत्तर इस प्रकार दे सकते हैं—
   मैं अपनी शिक्षा और किसी विशेष कौशल (जैसे खेल या कला) में महारत हासिल करने के लिए अपनी दृढ़ इच्छा और बुद्धि का उपयोग करना चाहता/चाहती हूँ। तोत्तो-चान की तरह, मैं भी अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए तब तक कठिन परिश्रम करूँगा/करूँगी जब तक कि मैं सफल न हो जाऊँ।"

- **भाषा-आधारित**

1. **समास-विग्रह और समास का नाम**
   (क) शक्ति के अनुसार—अव्ययीभाव समास
   (ख) रोग से पीड़ित—तत्पुरुष समास
   (ग) नीला है जो अम्बर—कर्मधारय समास
   (घ) दो पहरों का समाहार—द्विगु समास
   (ङ) छोटा और बड़ा—द्वंद्व समास
   (च) चंद्र है शिखर पर जिसके— बहुव्रीहि समास

2.

	कर्ता	**क्रिया**
(क)	तो-तो-चान	पहुँची
(ख)	(वह/उसने)	लाई
(ग)	बादल	बचा
(घ)	तोत्तो-चान	आमंत्रित किया।

3. **संधि-विच्छेद और संधि का नाम—**
   (क) सूर्य + उदय — गुण स्वर संधि
   (ख) सूर्य + अस्त — दीर्घ स्वर संधि
   (ग) पर + उपकार — गुण स्वर संधि
   (घ) परि + आवरण — यण स्वर संधि

4. **रूढ़ शब्द**—(वे शब्द जिनके सार्थक खण्ड नहीं हो सकते) चिड़िया, सूर्य, धूप, मित्र।
   यौगिक शब्द—(दो या दो से अधिक सार्थक शब्दों के मेल से बने शब्द)
   प्रधानमंत्री (प्रधान + मंत्री)
   अनपढ़ (अन + पढ़)
   सब्जी (सब्ज + ई)
   घरवाला (घर + वाला)
   पुस्तकालय (पुस्तक + आलय)
   पाठशाला (पाठ + शाला)
   सुशील (सु + शील)

- **क्रियाकलाप आधारित–**

विद्यार्थी कक्षा में शिक्षक की सहायता से स्वयं करें।

4. मित्रता

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–**

अपरिमार्जित, निमंत्रण, पवित्रता, बाल्यावस्था, स्वच्छंद, थियेटर, दुर्भाग्य, आध्यात्मिक।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. जीवन की सफलता हमारे आचरण, विचारों और हमारी संगति पर निर्भर करती है।

2. हमारे आचरण पर सबसे गहरा प्रभाव हमारी संगति (जिन लोगों के साथ हम रहते हैं) का पड़ता है।
3. कुसंग (बुरी) संगति के ज्वर को भयानक इसलिए कहा गया है क्योंकि यह केवल नीति और सद्‌वृत्ति का ही नाश नहीं करता, बल्कि बुद्धि का भी क्षय कर देता है। यह व्यक्ति को पतन के गर्त में गिरा देता है।
4. छात्रावस्था में मित्रता की धुन सवार रहती है। इस अवस्था में हृदय में नये–नये मित्र बनाने की तीव्र उमंग और चाह होती है।
5. हृदय को उज्ज्वल और निष्कलंक रखने का सबसे अच्छा उपाय बुरी संगति से बचना (बुरी छूत से दूर रहना) बताया गया है।

- **लिखित**

1. सच्ची मित्रता में सहानुभूति, निष्कपट प्रेम और एक–दूसरे के प्रति गहरा विश्वास होता है। एक सच्चा मित्र सुख और दुख दोनों में साथ निभाता है और हमेशा सही मार्ग दिखाता है।
2. मित्रों का चुनाव करते समय हमें उनकी संगति, स्वभाव और चरित्र पर ध्यान देना चाहिए। हमें ऐसे मित्र चुनने चाहिए जो हमें बुराइयों से बचाएँ और उन्नति के पथ पर अग्रसर करें।
3. सच्चे मित्र का कर्तव्य है कि वह अपने मित्र को गलत रास्ते पर जाने से रोके, उसकी कमियों को प्रेम से बताए और कठिन समय में ढाल बनकर उसकी रक्षा करे।
4. जब हम बुरी संगति में रहते हैं और लगातार नकारात्मक बातों को सुनते या देखते हैं, तो हमारा विवेक कुंठित हो जाता है। धीरे–धीरे वे बुराइयाँ हमें सामान्य लगने लगती हैं और हम उनके अभ्यस्त हो जाते हैं।
5. हमें अपने मित्रों से यह आशा रखनी चाहिए कि वे हमें उच्च आदर्शों की ओर प्रेरित करेंगे, हमारे दोषों को दूर करने में मदद करेंगे और सत्य के मार्ग पर चलने के लिए हमारा मनोबल बढ़ाएँगे। एक श्रेष्ठ मित्र ही जीवन को सार्थक बनाने में सहायक होता है।

- **अपनी समझ से**

सही विकल्प

1. (घ)
2. (ग)
3. (ख)
4. (क)
5. (क)

- **सोच-समझकर**

1. **अच्छे मित्र की पाँच विशेषताएँ—**
   - वह आपको सही रास्ता दिखाता है।
   - मुसीबत के समय आपका साथ देता है।
   - आपकी गलतियों को सुधारने में मदद करता है।
   - वह ईमानदार और विश्वसनीय होता है।
   - वह आपके आत्मबल और उत्साह को बढ़ाता है।
2. **बुराई की ओर ले जाने वाले मित्र—**ऐसे मित्र जो गलत आदतों (जैसे—झूठ बोलना, आलस्य या बुरी संगत) में लिप्त होते हैं, वे धीरे–धीरे हमें भी उसी ओर खींच ले जाते हैं।
3. **छात्रावस्था में मित्र बनाने की धुन—**इस उम्र में नए लोगों से मिलना और सामाजिक होना रोमांचक लगता है, इसलिए अक्सर छात्र बहुत जल्दी और बिना सोचे–समझे दोस्त बना लेते हैं।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

पंक्तियों का आशय—

- बुरी संगत एक बीमारी (बुखार) की तरह है जो न केवल आपके चरित्र को नष्ट करती है, बल्कि आपकी बुद्धि और विवेक को भी खत्म कर देती है।
- जैसे पैरों में बंधी चक्की इंसान को आगे नहीं बढ़ने देती और उसे नीचे गिरा देती है, वैसे ही बुरी संगति व्यक्ति की उन्नति रोक देती है।
- आज के समय में लोगों से मिलना–जुलना आसान है, लेकिन सच्चा मित्र ढूँढ़ना आज भी कठिन है।

सुझाव—जीवन में आगे बढ़ने के लिए हमेशा सकारात्मक और प्रेरणा देने वाले मित्रों का चुनाव करें।

- **रिक्त-स्थान**

1. प्रदर्शक **2.** कुसंग

3. मित्रता **4.** वैद्य

5. दोस्ती

- **पाठ से आगे**

मन के विचार

1. **मित्र के गुण**—किसी को मित्र बनाते समय मैं उसमें ईमानदारी, संकट में साथ देने का स्वभाव, अच्छी बातें करने की आदत और सहायक होने जैसे गुणों को देखूँगा/देखूँगी।

2. **मित्र की अच्छी बातें**—यदि कोई मेरा मित्र है, तो मुझे उसकी निस्वार्थ मदद करने की भावना और उसकी सच्चाई सबसे अच्छी लगती है।

3. अनुच्छेद-'सच्चा मित्र'

(1) सच्चा मित्र वही है जो सुख और दुख दोनों में समान रूप से साथ खड़ा रहे।

(2) वह हमें गलत राह पर जाने से रोकता हो और सही दिशा दिखाता हो।

(3) सच्ची मित्रता स्वार्थ पर नहीं बल्कि भरोसे और प्रेम पर आधारित होती है।

- **भाषा-आधारित**

उपसर्ग और मूल शब्द—

	उपसर्ग	मूल शब्द
(क)	अनु	कूल
(ख)	निर्	मल
(ग)	उप	योगी
(घ)	सम्	भव

प्रत्यय एवं मूल शब्द—

(क) मित्रता—मित्र (मूल शब्द) + ता (प्रत्यय)

(ख) सफलता—सफल (मूल शब्द) + ता (प्रत्यय)

(ग) उन्नति—उत् (उपसर्ग) + नति (मूल शब्द) + ता (प्रत्यय)

संधि और उपसर्ग से बना शब्द है।

(घ) मनभावनी—मनभावन (मूल शब्द) + ई (प्रत्यय)

पर्यायवाची शब्द—

(क) मित्र—सखा, दोस्त

(ख) भाई—भ्राता, तात

(ग) माता—माँ, जननी

(घ) छात्र—विद्यार्थी, शिक्षार्थी

वाक्य में कारक

(क) कारक—संबंधकारक ('के' चिह्न के कारण)

(ख) कारक—संबंधकारक ('के' चिह्न के कारण)

(ग) कारक—कर्मकारक ('के' चिह्न के कारण)

(घ) कारक—संबंधकारक ('के' चिह्न के कारण)

(ङ) कारक—कर्ताकारक ('ने' चिह्न के कारण)

गद्यांश में विराम चिह्नों का सही प्रयोग—

मित्र का कर्तव्य इस प्रकार बताया गया है—"उच्च और महान कार्यों में इस प्रकार सहायता देना, मान बढ़ाना और साहस दिलाना कि तुम अपनी सामर्थ्य से बाहर काम कर जाओ।" यह कर्तव्य उसी से पूरा होगा, जो दृढ़-चित्र और सत्य-संकल्प का हो। इससे हमें ऐसे मित्रों की खोज में रहना चाहिए जिनमें हमसे अधिक आत्मबल हो। हमें उनका पल्ला उसी तरह पकड़ना चाहिए जिस तरह सुग्रीव ने राम का पल्ला पकड़ा था। मित्र हों तो प्रतिष्ठित और शुद्ध हृदय के हों, मृदुल और पुरुषार्थी हों, शिष्ट और सत्यनिष्ठ हों, जिससे हम अपने को उनके भरोसे पर छोड़ सकें और यह विश्वास कर सकें कि उनसे किसी प्रकार का धोखा न होगा।

- **क्रियाकलाप आधारित—**

विद्यार्थी कक्षा में शिक्षक की सहायता से करें।

5. स्वदेव प्रेम

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो—**

असीम, निष्प्राण, मनुष्यता, विलसित, विभव, मातृभूमि, निछावर, अलौकिक।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. इस कविता में अपने देश से निस्वार्थ प्रेम करने और देश के लिए सर्वस्व न्योछावर करने की शिक्षा दी गई है।
2. इस कविता के रचयिता का नाम रामनरेश त्रिपाठी है।
3. कविता में मृत्यु को विश्राम स्थल कहा गया है, जहाँ जीव अपने पुराने शरीर को त्यागकर नया शरीर धारण करता है।
4. कविता में भारतवर्ष (मातृभूमि) को धरा शिरोमणि कहा गया है।
5. निर्भय होकर मृत्यु का स्वागत करना चाहिए।

- **लिखित**

1. विषुवत-रेखा (भूमध्य रेखा) का वासी भीषण गर्मी में भी हाँफ-हाँफकर (कष्ट सहकर) जीता है, लेकिन अपनी मातृभूमि के प्रति अपार प्रेम के कारण उसे छोड़कर कहीं नहीं जाता। उसे अत्यधिक गर्मी और उमस जैसी परेशानियाँ झेलनी पड़ती हैं।
2. ध्रुववासियों को अत्यधिक ठंड, बर्फबारी और महीनों तक सूरज न निकलने के कारण अंधेरे जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। वे काँप-काँपकर अपना जीवन बिताते हैं।
3. हम अपनी मातृभूमि और उसके प्रति अपने देशप्रेम का त्याग नहीं कर सकते।
4. कविता के अनुसार, मनुष्यता उस स्थान पर विकसित होती है जहाँ व्यक्ति अपने देश के गौरव और मान-मर्यादा के मर-मिटने को तैयार रहता है।
5. इस कविता का मुख्य संदेश सच्चा देशप्रेम है। कवि संदेश देते हैं कि देश के प्रति हमारा प्रेम केवल शब्दों में नहीं, बल्कि त्याग और बलिदान में झलकना चाहिए। हमें अपनी मातृभूमि पर गर्व करना चाहिए और उसकी रक्षा के लिए प्राणों की बाजी लगाने को तैयार रहना चाहिए।

- **प्रत्यास्मरण**

(i) ध्रुव-वासी अत्यधिक ठंड और अंधकार (हिम और तम) वाले क्षेत्रों में रहता है। वह कँपकँपा देने वाली कड़ाके की ठंड में भी अपना जीवन बड़े कष्ट के साथ, लेकिन हिम्मत और धैर्य से जीता है।

(ii) वही ध्रुव-वासी, जो भीषण ठंड में जीवन व्यतीत करता है, अपनी मातृभूमि के प्रति इतना समर्पित होता है कि वह उस पर अपने प्राण-न्योछावर कर देता है।

(iii) 'तम' शब्द के पर्यायवाची है—अंधकार, अंधेरा, तिमिर

- **अपनी समझ से**

सही विकल्प

1. (क) 2. (क)
3. (घ) 4. (ग)
5. (क)

- **पंक्तियों पर चर्चा**

भाव स्पष्टीकरण—

1. **भाव**—कवि का मानना है कि मृत्यु से डरना नहीं चाहिए। मृत्यु शरीर के लिए विश्राम की तरह है, जहाँ थकने के बाद जीव शान्ति प्राप्त करता है और पुनः नई ऊर्जा के साथ जन्म लेता है।
2. **भाव**—यहाँ सच्चे प्रेम की परिभाषा दी गई है। कवि कहते हैं कि वास्तविक प्रेम वही है जिसमें देश और मानवता के प्रति एक अलौकिक (ईश्वरीय या महान) लगाव हो, जो स्वार्थ से ऊपर हो।

3. **भाव**—प्रेम केवल बातों में नहीं, बल्कि त्याग से सिद्ध होता है। जिस प्रेम में त्याग की भावना नहीं होती, वह बिना प्राण के शरीर की तरह (मृत) होता है। सच्चा देश प्रेम वही है जो जरूरत पड़ने पर अपना सब कुछ न्योछावर करने की शक्ति रखता हो।

ये पंक्तियाँ हमें निस्वार्थ प्रेम, साहस और देश के प्रति सर्वस्व त्याग करने की प्रेरणा देती हैं।

- **सोच-समझकर**

1. दोनों ही क्षेत्रों के निवासियों को कठोर प्राकृतिक परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। जहाँ ध्रुव प्रदेश के लोग अत्यधिक ठंड और बर्फबारी में जीवन व्यतीत करते हैं। वहीं विषुवत रेखा (भूमध्य रेखा) के निवासी अत्यधिक गर्मी और उमस भरे वातावरण में रहते हैं। दोनों ही अपनी मातृभूमि के प्रति अपार प्रेम रखते हैं और विषम परिस्थितियों के बावजूद अपनी जगह नहीं छोड़ते।
2. कविता के भावार्थ के अनुसार, मृत्यु एक विश्रामस्थल है जहाँ मनुष्य अपने पुराने और थके शरीर को त्यागकर नया रूप धारण करता है। मृत्यु जीवन का अन्त नहीं है बल्कि एक नए जीवन की शुरुआत के लिए पुराने वस्त्र बदलने जैसा है। इसलिए, साहस के साथ इसका स्वागत करना चाहिए।

रिक्त स्थान—

"तुम तो, हे प्रिय बंधु! स्वर्ग-सी,
सुखद, सकल विभवों की आकर।
धराशिरामणि मातृभूमि में
धन्य हुए हो जीवन पाकर।।"

सुमेलन

सही मिलान—

स्तंभ (क)	**स्तंभ (ख)**
ध्रुव-वासी	काँप-काँपकर
विषुवत-वासी	हाँफ-हाँफकर
कायारूपी	वस्त्र वहाकर
अनुराग	अलौकिक
मृत्यु	सरिता है।

- **पाठ से आगे**

मन के विचार

1. हमारी मातृभूमि भारत की कई ऐसी विशेषताएँ हैं, जो गर्व करने योग्य हैं—

- **विविधता में एकता**—यहाँ अलग-अलग धर्मों, भाषाओं और संस्कृतियों के लोग मिल-जुलकर रहते हैं।
- **प्राकृतिक सुन्दरता**—हिमालय जैसी ऊँची पर्वत शृंखलाएँ, पवित्र नदियाँ (जैसे गंगा-यमुना) और विशाल समुद्र इसकी शोभा बढ़ाते हैं।
- **गौरवशाली इतिहास**—यह महान ऋषियों, महापुरुषों और वीरों की भूमि रही है।
- **अतिथि सत्कार**—'अतिथि देवो भव' की भावना यहाँ की मूल पहचान है।

2. कवि ने हमें 'वीरों का वंशज' इसलिए कहा है क्योंकि—

- **गौरवशाली अतीत**—हमारे पूर्वज महाराणा प्रताप, शिवाजी महाराज और झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई जैसे साहसी वीर थे, जिनके रक्त की धारा हमारी रंगों में भी बह रही है।
- **साहस और धैर्य**—भारतीयों ने इतिहास में कई कठिन परिस्थितियों और विदेशी आक्रमणों का डटकर मुकाबला किया है।
- **संस्कार**—वीरता केवल युद्ध तक ही सीमित नहीं है, बल्कि सत्य और न्याय के लिए खड़े होना भी वीरता है, जो हमें विरासत में मिली है।
- **दृढ़ संकल्प**—हम अपने देश की आन-बान-शान की रक्षा के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं, जो एक वीर वंशज होने की सच्ची पहचान है।

- **भाषा-आधारित**

1. **पद्य और गद्य में अन्तर—**

   पद्य—इसमें शब्दों का क्रमलय और तुकबंदी के अनुसार होता है।

   उदाहरण—"आत्मा के विकास से जिसमें, मनुष्यता होती है। विकसित।"

गद्य—इसमें व्याकरण के सामान्य नियम 'कर्ता + कर्म + क्रिया का पालन किया जाता है।

उदाहरण—"जिसमें आत्मा के विकास से मनुष्यता विकसित होती है।"

व्याकरणिक संरचना—गद्य में वाक्यों को एक निश्चित क्रम में रखा जाता है, जबकि पद्य में लय तुक और ध्वनि-साम्य को प्राथमिकता दी जाती है। यही तत्व साधारण गद्य को कविता का रूप दे देते हैं।

2. **(क)** आलौकिक अनुराग (प्रेम) रखता है।
   (ख) काँप-काँप कर जी लेता है।
   (ग) मृत्यु का निर्भय होकर स्वागत करो।
   (घ) त्याग के बिना प्रेम प्राणहीन (निष्प्राण) है।
3. **निम्नलिखित शब्दों के अर्थ एवं वाक्य प्रयोग—**

	अर्थ	वाक्य प्रयोग
(क)	प्रेम/भक्ति	हमें अपने देश के प्रति गहरा अनुराग होना चाहिए।
(ख)	ऐश्वर्य/धन -सम्पत्ति	मनुष्य को अपने विभव पर कभी अहंकार नहीं करना चाहिए।
(ग)	श्रेष्ठ/ सिर का रत्न	तुलसीदास हिन्दी साहित्य के कवियों में शिरोमणि हैं।
(घ)	नया	वसंत ऋतु के आते ही प्रकृति में नूतन उत्साह छा जाता है।

4. **अलंकार—**
1. **अनुप्रास अलंकार**—इन पंक्तियों में 'प्रेम' और 'प्राण' जैसे शब्दों में 'प' वर्ण की आवृत्ति है।
   'अमल' असीम' में 'अ' वर्ण की आवृत्ति है।
   'विकास-विकसित' में 'व' वर्ण की आवृत्ति है।
2. **रूपक अलंकार**—"देश-प्रेम वह पुण्य श्रेत्र है"—यहाँ देश-प्रेम को सीधे-सीधे 'पुण्य श्रेत्र' (पवित्र स्थान) मान लिया गया है, इसलिए यहाँ रूपक अलंकार है।
3. **पुनरूक्ति प्रकाश अलंकार**—"करो प्रेम पर प्राण निछावर"—यहाँ भाव की तीव्रता दिखाने के लिए शब्दों का प्रयोग किया गया है।
   सच्चा प्रेम वही है, जिसकी तृप्ति आत्म-बलि पर निर्भर, त्याग बिना निष्प्राण प्रेम है, करो प्रेम पर प्राण निछावर।

5. **शब्दों के पर्यायवाची—**

(क) नदी, तटिनी **(ख)** अंधेरा, अंधकार
(ग) पृथ्वी, भूमि **(घ)** पानी, नीर
(ङ) शरीर, तन

6. **शब्दों के विलोम शब्द—**

(क) अप्रिय **(ख)** मरण/मृत्यु
(ग) कायर **(घ)** भयभीत
(ङ) पुरातन **(च)** पशुता

- **क्रियाकलाप आधारित—**

कक्षा में विद्यार्थी शिक्षक की सहायता से करें।

6. बसंत की ईमानदारी

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो—**

दरवाजा, परिचित, किशनगंज, रुआँसा, अस्पताल, उत्सुकता, दुर्लभ, एम्बुलेंस।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. चौराहे पर सामान बेचने वाले बालक का नाम <u>बसंत</u> था।
2. राजकिशोर से बालक ने सामान खरीदने का अनुरोध किया और कहा था, "साहब कुछ तो लीजिए।"
3. बसंत रुआँसा इसलिए हो गया था क्योंकि राजकिशोर ने उसका सामान लेने से मना कर दिया था, उसके पास पैसे भी नहीं थे।
4. बसंत वापस नहीं आ सका क्योंकि राजकिशोर को पैसे वापस करने आते समय रास्ते में उसका <u>एक्सीडेंट</u> (दुर्घटना) हो गया था।

5. राजकिशोर के बचे हुए पैसे लौटाने बसंत का भाई प्रताप आया था।

- **लिखित**

1. उन्होंने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि वे बसंत की ईमानदारी से बहुत प्रभावित हुए थे। उन्हें अहसास हुआ कि गरीबी में भी कोई इतना सच्चा और ईमानदार हो सकता है।
2. राजकिशोर ने अपने घर का पता किशनगंज बताया था।
3. सूचना मिलते ही राजकिशोर तुरंत बसंत के घर गए ताकि उसकी मदद कर सकें और उसका इलाज करवा सकें।
4. डॉक्टर ने बताया कि पैर की हड्डी टूट गई है और उसे तुरंत इलाज व आराम की जरूरत है।
5. उनके अनुसार बसंत में अत्यधिक ईमानदारी और स्वाभिमान का दुर्लभ गुण था। विकट परिस्थितियों में भी उसने झूठ नहीं बोला और पराए पैसे नहीं रखे।

- **अपनी समझ से**

1. (घ)　　4. (ख)
2. (घ)　　5. (क)
3. (ग)

- **सोच-समझकर**

1. पंडित राजकिशोर एक दयालु और संवदेनशील व्यक्ति थे। जब उन्होंने बसंत की ईमानदारी और उसके स्वाभिमान को देखा कि वह भीख माँगने के बजाय बटन बेचकर मेहनत से पैसे कमाना चाहता है, तो उनका हृदय पिघल गया। बसंत की दयनीय स्थिति और उसकी सच्चाई ने उन्हें उसकी मदद करने के लिए प्रेरित किया होगा।
2. कृष्ण कुमार की बात आंशिक रूप से उचित कही जा सकती है क्योंकि समाज में ऐसे कई लोग या बच्चे होते हैं जो मजदूरी का ढोंग करके लोगों को ठगते हैं। उनका अनुभव उन्हें सावधान रहने की सलाह दे रहा था।

   कारण– हालाँकि हर किसी को एक नजरिए से देखना अनुचित है। बसंत जैसे ईमानदार बच्चे भी होते हैं जो वास्तव में मुसीबत में होते हैं। कृष्ण कुमार की सोच सामान्य सतर्कता को दर्शाती है, लेकिन बिना जाँच-परख के किसी को 'ठग' मान लेना गलत है। बसंत ने अंत में अपनी ईमानदारी साबित कर दी थी।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. **आशय–** ये शब्द पंडित रामकिशोर के प्रति सम्मान और अपनी स्थिति पर संकोच व्यक्त करते हैं, जब बसंत का भाई प्रताप, राजकिशोर जी के घर पहुँचता है, तो वह हैरान और शर्मिंदा होता है कि एक सम्मानित व्यक्ति को उनके छोटे से घर या इस स्थिति में आना पड़ा। उसे लगता है कि राजकिशोर जी उनके बारे में गलत धारणा न बना लें।
2. **आशय–** यहाँ पंडित राजकिशोर की बसंत के प्रति सकारात्मक सोच झलकती है। हालाँकि बसंत पैसे लेकर वापस नहीं लौटा था, फिर भी राजकिशोर जी को उसके व्यवहार और ईमानदारी पर भरोसा था। उन्हें यकीन था कि वह लड़का बुरा नहीं है और उसके न लौटने के पीछे कोई न कोई मजबूरी रही होगी।

- **किसने कहा / किससे कहा**

	किसने कहा	किससे कहा
1.	बसंत ने	राजकिशोर से
2.	राजकिशोर ने	बसंत से
3.	कृष्ण कुमार ने	राजकिशोर से
4.	राजकिशोर ने	प्रताप से
5.	राजकिशोर ने	बसंत से

- **सत्य-असत्य**

1. (5), 2. (3), 3. (5), 4. (3), 5. (5) ।

- **रिक्त-स्थान**

1. बसंत　　4. बसंत
2. छन्नी　　5. प्रताप
3. प्रताप

- **पाठ से आगे**

मन के विचार

1. बसंत जैसे बालक ईमानदारी, स्वाभिमान और सच्चाई के प्रतीक हैं। आज के समय में जब लोग स्वार्थ के लिए गलत रास्ते अपनाते हैं, तब बसंत जैसे बच्चे हमें सिखाते हैं कि गरीबी में भी अपना आत्मसम्मान और ईमानदारी नहीं खोनी चाहिए। ऐसे बालक समाज के लिए प्रेरणा हैं।
2. पं. राजकिशोर एक संवेदनशील और मानवतावादी व्यक्ति हैं। वे केवल उपदेश नहीं देते, बल्कि एक गरीब बच्चे की ईमानदारी को पहचानकर उसकी मदद के लिए आगे आते हैं। समाज को ऐसे ही लोगों की जरूरत है जो दूसरों के दुख-दर्द को समझें और सही व्यक्ति का साथ दें।
3. हाँ, अक्सर बाजारों और चौराहों पर छोटे बच्चे सामान बेचते या मेहनत करते दिख जाते हैं। इनमें से कई बसंत की तरह ही स्वाभिमानी हैं जो भीख माँगने के बजाय मेहनत करके कमाना पसंद करते हैं। हमें उनकी मेहनत का सम्मान करना चाहिए।

भाषा-आधारित

- **विलोम शब्द**

शब्द	**विलोम शब्द**
ईमानदार	बेईमान
गुण	अवगुण
दुर्लभ	सुलभ
दयालु	क्रूर
मेहनती	आलसी

- **लिंग बदलकर–**

(क) पंडिताइन (ख) बालिका

(ग) चिकित्सिका (घ) बेटा

- **उचित विराम चिह्न–**

"जी, मुझे मेरे भाई ने भेजा है। आज दोपहर को उसने आपको एक छन्नी दी थी। आपसे बीस रुपये का नोट लेकर भुनाने गया था, किन्तु जब भुनाकर लौट रहा था, तो मोटरगाड़ी के नीचे आ गया। उसके दोनों पैर कुचल गए, वह बेहोश हो गया था, इसलिए वह आपके पैसे देने न आ सका। बहुत मुश्किल से कुछ लोग उसे घर तक पहुँचा गए थे। बड़ी देर में जब होश आया, तो उसने मुझे आपके पैसे लौटाने को कहा। मैं आपके अठारह रुपये लाया हूँ।

- **वाक्य निर्माण**

(क) घायल व्यक्ति को तुरंत अस्पताल ले जाया गया।

(ख) हमें किसी लाचार व्यक्ति को भीख देने के बजाय उसकी मदद करनी चाहिए।

(ग) शहर के मुख्य चौराहे पर बहुत भीड़ रहती है।

(घ) बालक की ईमानदारी देखकर सभी लोग बहुत प्रभावित हुए।

(ङ) माँ आज फल और सब्जियाँ लेने बाजार गई है।

- **क्रियाकलाप आधारित–**

कक्षा में विद्यार्थी शिक्षक सहायता से स्वयं करें।

7. मेहनत का फल

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–**

ड्राइवर, ओवरटेक, मुश्किल, कैमरा, शीशे, सत्यानाश, मनुष्य, चैन।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. सेठ लुटगयाराम की कीमती कार चोरी हो गई थी, इसलिए वह परेशान था।

2. वह कार सेठ के लिए कीमती थी क्योंकि वह बहुत महँगी थी और परदादा को मिली उपहार थी।
3. स्वराज कपूर की फिल्म का नाम 'शैतान और भगवान' है।
4. सेठ जी ने कार इसलिए नहीं ली क्योंकि कार की हालत खराब हो चुकी थी और उसे एक फिल्म के सीन के लिए इस्तेमाल किया जाना था।

- **लिखित**

1. चचा सामंत को जासूसी का शौक था और इस शौक को पूरा करने में उनका नौकर जग्गा सहायक था।
2. सेठ लुटगयाराम अपनी चोरी हुई कार की तलाश में चचा सामंत के पास गया था क्योंकि चचा सामंतकार का पता लगा सकते थे।
3. स्वराज कपूर एक मशहूर अभिनेता था। उसने चचा से उनकी पुरानी कार को अपनी फिल्म की शूटिंग के लिए किराए पर या खरीदने के बारे में बात की।
4. डायरेक्टर को कार का दृश्य फिल्म 'शैतान और भगवान' में डालना था। उसने इसके लिए चचा को एक बड़ी राशि (नोटों के पाँच बंडल) देने की बात कही थी।

अपनी समझ से

- **सही विकल्प**

1. (ख) 2. (क)
3. (ख) 4. (ख)

- **सोच-समझकर**

1. (i) चचा सामंत एक मजाकिया और चतुर व्यक्ति थे।
   (ii) वे अपनी बातों और युक्तियों से दूसरों को प्रभावित करना जानते थे।
   (iii) वे हर समस्या का हल अपनी सूझबूझ से निकालने में माहिर थे।
2. चचा सामंत ने अपनी वाकपटुता और बुद्धिमानी का प्रयोग किया। उन्होंने स्थिति को इस तरह से घुमाया कि कारचोरीलाल को न चाहते हुए भी कार उन्हें देनी पड़ी।
3. सरदार और चचा के बीच झगड़ा टैक्सी के किराये को लेकर हो रहा था।
   परिणाम– अंत में चचा सामंत की चतुराई की जीत हुई और मामला सुलझ गया, जिससे स्थिति सामान्य हो गई।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. **आशय–** यह पंक्ति ऐसे व्यक्ति की व्याकुलता या जल्दबाजी को दर्शाती है जो अपने काम के बदले तुरंत भुगतान चाहता है। उसे लगता है कि सामने वाला व्यक्ति पैसे देने में देरी करने के लिए मजाक का सहारा ले रहा है।
2. **आशय–** यहाँ 'सेवा' शब्द का प्रयोग व्यंग्य के रूप में किया गया है। इसका अर्थ है कि सामने वाले ने मदद करने के बजाय नुकसान पहुँचाया है तथा स्थिति को और बिगाड़ दिया है।
3. **आशय–** यह पंक्ति गहरी निराशा और गुस्से को व्यक्त करती है। इसका अर्थ है कि किसी की लापरवाही या गलत काम की वजह से कार पूरी तरह से खराब हो गई है।
4. **आशय–** 'शौक चर्राना' एक मुहावरा है जिसका अर्थ है अचानक किसी चीज का भूत सवार होना या तीव्र इच्छा होना। यहाँ बताया गया है कि अब पात्र को जासूसी करने का नया और अजीब शौक लग गया था।

- **रिक्त-स्थान**

रिक्त स्थानों की पूर्ति

1. लुटगयाराम, घर 4. स्वराज कपूर
2. पिस्तौल 5. सामंत, हस्ताक्षर
3. कच्ची गोलियाँ

- **पाठ से आगे**
  मन के विचार

1. यदि मैं सेठ लुटगयाराम की जगह होता तो मैं तुरन्त पुलिस में रिपोर्ट करवाता और सोशल मीडिया और समाचार पत्रों के

माध्यम से लोगों से सहायता माँगता। साथ ही, आस-पास के सीसीटीवी फुटेज की भी जाँच करता।

2. 1. सामंत अपनी मेहनत का फल न मिलने पर निराश हो जाता और शायद भविष्य में किसी की मदद करने से कतराता।

2. हो सकता है कि सामंत कानूनी रास्ता अपनाता या गाँव के बड़ों की मदद से अपने हक के पैसे माँगता।

3. यह कहानी सुखद अन्त के बजाय अन्याय और निराशा पर समाप्त होती, जिससे पाठक को बुरा महसूस होता।

भाषा-आधारित

1. पर का प्रयोग –

1. **अर्थ–** लेकिन/परन्तु

वाक्य– उसने बहुत मेहनत की, पर वह परीक्षा में प्रथम नहीं आ सका।

2. **अर्थ–** ऊपर (किसी स्थान को दर्शाना)

वाक्य– मेज पर एक सुन्दर फूलदान रखा है।

2. संधि-विच्छेद –

1. विद्या + आलय
2. शरण + अर्थी
3. मनः + कामना
4. महा + इंद्र

3.

	उपसर्ग	मूलशब्द	प्रत्यय
1.	त्रि	लोक	ई
2.	अ	कथन	ईय
3.	अ	न्याय	ई
4.	अन	देख	आ
5.	अ	लोक	इक

4. मुहावरे का अर्थ –

1. **अर्थ–** बहुत गुस्सा करना

वाक्य प्रयोग– परीक्षा में कम अंक आने पर पिताजी रोहन पर लाल-पीले होने लगे।

2. **अर्थ–** अत्यधिक प्रसन्न होना

वाक्य प्रयोग– कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने की खबर सुनकर मीना फूले नहीं समाई।

3. **अर्थ–** हैरान रह जाना या दंग रह जाना।

वाक्य प्रयोग– अचानक अपने पुराने मित्र को देखकर राहुल हक्का-बक्का रह गया।

4. **अर्थ–** अत्यधिक प्रसन्न होना।

वाक्य प्रयोग– वर्षों बाद अपने बेटे को घर लौटा देख माँ की बाँछें खिल गईं।

- **क्रियाकलाप आधारित–**

कक्षा में विद्यार्थी शिक्षक की सहायता से स्वयं करें।

8. छोटा जादूगर

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- छात्र स्वयं करें।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. जीविका चलाने के लिए।
2. पहली बार लेखक ने झोंपड़ी में देखा कि एक स्त्री चिथड़ों से लदी हुई काँप रही थी।
3. छोटे जादूगर के खेल में भालू मना रहा था। बिल्ली रूठ रही थी। बंदर घुड़क रहा था। गुड़िया का ब्याह हो रहा था। गुड्डा वर काना था।
4. शरबत पीकर लड़का व लेखक निशाना लगाने गए।
5. जादूगर की माँ को अस्पताल से पैसे न होने के कारण निकाल दिया गया था।

- **लिखित**

1. कार्निवाल के मैदान में लेखक को एक लड़का (छोटा जादूगर) मिला। उसके गले

में फटे कुर्ते के ऊपर एक मोटी सी सूत की रस्सी पड़ी थी और जेब में कुछ ताश के पत्ते थे। उसके मुख पर गम्भीर विषाद था।

2. छोटे जादूगर को अल्पावस्था में ही जीविका उपार्जन इसलिए करना पड़ा क्योंकि उसके पिताजी जेल में थे और माँ बीमार थी।
3. कलकत्ता में लेखक छोटे जादूगर से कार्निवाल के मैदान में मिला। लेखक छोटे जादूगर को देखकर उसकी ओर आकर्षित हुआ और उसे उस दिन का अपना साथी चुना।
4. लेखक को छोटे जादूगर पर क्रोध इसलिए आया क्योंकि उसकी माँ ने कहा था कि आज तुरंत चले आना, मेरी अंतिम घड़ी समीप है। ऐसी स्थिति में भी वह माँ को छोड़कर खेल दिखाने चला आया था।
5. सड़क के किनारे खेल दिखाते समय छोटा जादूगर उदास इसलिए था क्योंकि उसकी माँ की अंतिम घड़ी समीप थी। उसका ध्यान अपनी माँ पर था और खेल दिखाने में उसका मन नहीं लग रहा था।

- **प्रत्यास्मरण**

1. लेखक द्वारा क्रोध करने पर छोटा जादूगर उससे कुछ अधिक कहने पर अपना अपमान अनुभव कर रहा था।
2. छोटे जादूगर से लेखक ने क्रोध में कहा – "तब भी तुम खेल दिखाने चले आए।"
3. छोटे जादूगर के मुँह पर परिचित तिरस्कार के भाव थे।
4. मनुष्य किसी के सुख-दुख की तुलना अपने माप के अनुसार करता है।

- **अपनी समझ से**

1. (ख)
2. (क)
3. (क)
4. (ग)
5. (ग)

- **सोच-समझकर**

1. इस रचना से छोटे जादूगर के व्यक्तित्व के बारे में पता चलता है कि वह बड़ा ही सरल, संतोषी और नि:स्वार्थी बालक है। वह पुरुस्कार व दिखावे से अधिक अपने कर्तव्य को महत्त्व देता है।
2. इस पंक्ति के माध्यम से लेखक आतिशबाजी और रोशनी का वर्णन कर रहा है। वह अपने चारों ओर चमचमाती रोशनी और आतिशबाजी को देखकर उतावला हो उठता है।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. "उस उज्जवल धूप में सारा संसार जैसे जादू-सा मेरे चारों ओर नृत्य करने लगा।" पंक्ति का अर्थ है कि इस घटना से इतना विचलित और भावुक हो गया कि उसे आसपास की दुनिया अस्थिर और विचित्र सी लगने लगी। जीवन की सच्चाई और करुणा ने उसके मन को झकझोर कर रख दिया।
2. इस पंक्ति का आशय है कि छोटा जादूगर अपने काम को ही अपनी पहचान मानता है। वह संघर्षशील और स्वाभिमानी है। वह जादू दिखाकर अपना जीवन-यापन करता है। उसे अपने काम पर गर्व है।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. जेल
2. कम्बल
3. बारह
4. माँ-माँ

- **किसने, किससे कहा?**

1. लेखक ने छोटे जादूगर से
2. छोटे जादूगर ने लेखक से
3. लेखक की पत्नी ने छोटे जादूगर से
4. छोटे जादूगर ने लेखक से
5. लेखक ने छोटे जादूगर से

- **सही-गलत**

1. (✗), 2. (✓), 3. (✗), 4. (✓), 5. (✓)।

- **पाठ से आगे**

1. छोटे जादूगर की बीमार माँ अपने बेटे के बारे में यही सोचती होगी कि वह सकुशल

जीवन यापन करे, किसी प्रकार की परेशानी न आए और ईश्वर उसका भला करे।

2. हाँ, मैंने ऐसा ही मार्मिक चरित्र अपने गाँव में देखा है। एक बूढ़ी माँ अपने बीमार बेटे का मजदूरी करके इलाज कराती रही। जबकि उसके बेटे की शादी हो चुकी थी और एक बेटा भी था, किंतु पत्नी उसे छोड़कर चली गई। कुछ समय बाद बेटे का भी निधन हो गया। आज बेचारी और भी वृद्ध हो चुकी है और अब अपने पोते का भरण-पोषण करती है।

- **भाषा आधारित**

1. (क) से ऊपर (घ) के अंदर
   (ख) के साथ (ङ) के बिना
   (ग) के संग

2. **(क) लोट-पोट होना –** बहुत अधिक खुशी/दर्द होना।

वाक्य प्रयोग – बच्चे जोकर का कमाल देखकर हँसी से लोट-पोट हो गए।

(ख) अंतिम घड़ी समीप आना – मृत्यु नजदीक होना।

वाक्य प्रयोग – बीमार बालक की अंतिम घड़ी समीप थी।

(ग) नौ दो ग्यारह होना – भाग जाना।

वाक्य प्रयोग – गाँव में आया भेड़िया कुत्तों को देखकर नौ दो ग्यारह हो गया।

(घ) आँखें बदलना – गुस्से में देखना।

वाक्य प्रयोग – बालक को बार-बार डाँट पड़ने पर उसकी आँखें बदल गईं।

3. (क) कर्ण – कान
   (ख) दुग्ध – दूध
   (ग) नृत्य – नाच
   (घ) रात्रि – रात

4. मैंने पूछा, "और उस पर्दे में क्या है? तुम वहाँ गए थे?" "नहीं, मैं वहाँ न जा सका। टिकट लगता है।" मैंने कहा, "तो चलो, मैं वहाँ पर तुमको लिवा चलूँ।" मैंने मन-ही-मन कहा, 'भाई आज के तुम्हीं मित्र रहे।' उसने कहा, "वहाँ जाकर क्या कीजिएगा? चलिए निशाना लगाया जाए।" मैंने उससे सहमत होकर कहा, "तो फिर चलो, पहले शरबत पी लिया जाए।" उसने स्वीकारसूचक सिर हिला दिया।

- **क्रियाकलाप आधारित**

  छात्र स्वयं करें।

9. बसंती हवा

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध बोलो और लिखो–** मस्तमौला, उद्देश्य, झकोरा, लहलहाते, चमचमाती।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. मस्तमौला हवा को कहा गया है।
2. बसन्ती हवा ने आम के पेड़ को झकोरा था।
3. दोपहर व्यतीत होने तक हवा गेहूँ की फसल के खेत में रही थी।
4. हवा द्वारा हिलाने पर भी अलसी पौधे की कलसी नहीं गिरी थी।
5. बसंती हवा को देखते ही अरहरी लजा गई थी।

- **लिखित**

1. बसंती हवा शहर, गाँव, बस्ती, नदी, रेत, निर्जन, हरे खेत, पोखर सब जगह जाती है।
2. महुआ के पेड़ पर चढ़कर बसंती हवा ने थपाथप मचाया।
3. पेड़ों से उतरने के बाद बसंती हवा गेहूँ के खेत में पहुँची।

4. बसंती हवा आम के पेड़ के कान में 'कू' करती है।
5. सम्पूर्ण सृष्टि बसंती हवा के साथ हँसने लगती है।

- **प्रत्यास्मरण**

संदर्भ एवं प्रसंग– केदारनाथ अग्रवाल द्वारा रचित 'बसंती हवा' एक आनंदमयी और कल्पनाशील कविता है, जिसमें हवा को एक निडर, मस्तमौला और स्वतंत्र मुसाफिर के रूप में चित्रित किया गया है। यह हवा बिना किसी फिक्र के, खेत-खलिहानों, नदियों और पेड़ों के बीच चंचलता से घूमती है और प्रकृति में नई ऊर्जा व खुशी लाती है।

व्याख्या– पथिक आ रहा था, उसे भी बंसती हवा ने धकेल दिया, इस सबको देखकर दिशाएँ हँसने लगीं। हरे-भरे खेत भी लहलहाते हुए हँसने लगे, चमचमाती धूप भी बसंती हवा को देखकर हँसने लगी। बसंती हवा पथिक (राहगीर) को हिलाकर वह पूरी सृष्टि (पेड़, खेत, धूप) में हँसी और खुशी भर देती है।

संक्षेप में, यह कविता बसंत ऋतु के आगमन पर प्रकृति के रंगीन, जीवंत और स्वतंत्र रूप को दर्शाती है।

- **अपनी समझ से**

1. (ख) मस्तमौला
2. (घ) सभी से
3. (क) आम के
4. (ग) पथिक को
5. (क) जगत

- **सोच-समझकर**

1. ईश्वर द्वारा हवा (वायुमंडल) की रचना न होने पर पृथ्वी पर जीवन कतई संभव नहीं था, क्योंकि हवा ही जीवन का आधार है। इसके बिना श्वसन क्रिया ठप होने से मिनटों में जीवों की मृत्यु हो जाती, पौधे भोजन नहीं बना पाते और पृथ्वी बाह्य अंतरिक्ष के रेडिएशन से झुलस जाती। हवा साँस, सुरक्षा और ध्वनि के प्रसार के लिए अनिवार्य है।

   हवा में मौजूद ऑक्सीजन श्वसन के लिए अनिवार्य है, जिसके बिना मानव और जंतु जीवित नहीं रह सकते। पौधे हवा में उपस्थित कार्बन डाइऑक्साइड का उपयोग करके अपना भोजन बनाते हैं। हवा के बिना न पौधे रहेंगे, न भोजन।

   वायुमंडल की गैसें सूर्य से आने वाली पराबैंगनी किरणों से पृथ्वी की रक्षा करती हैं। हवा ध्वनि तरंगों को प्रवाहित करती है, जिससे हम सुन पाते हैं और यह पृथ्वी के तापमान को भी नियंत्रित रखती है।

   हवा के बिना पृथ्वी मंगल की तरह एक निर्जीव और बंजर ग्रह बन जाती।

2. यदि बसंती हवा पूरी दोपहरी एक ही पेड़ पर थपथप (हलचल) मचाती रहती, तो पेड़ की टहनियाँ और पत्ते बुरी तरह थककर चूर हो जाते। लगातार झकझोरने से फूल और कच्चे फल नीचे गिर सकते थे, जिससे पेड़ का सौंदर्य कम हो जाता और उसे काफी नुकसान पहुँचता।

   हवा के लगातार झटकों से पत्ते झड़ जाते और टहनियाँ टूट भी सकती थीं। पेड़ पर लगे फूल और छोटे फल हवा की मस्ती में नीचे गिर जाते, जिससे फल कम आते। पेड़ को आराम नहीं मिलता और वह पूरी तरह झुककर थक जाता।

   हालाँकि, बसंती हवा निडर और मस्तमौला है, वह किसी एक स्थान पर रुकती नहीं, बल्कि प्रकृति में नई ऊर्जा और मस्ती का संचार करती है।

- **भाव चर्चा**

1. भाव – हवा खुद को बावली इसलिए कहती है क्योंकि वह अपनी मर्जी की मालिक है और बिना किसी योजना के, बस नटखटपन में इधर-उधर चलती रहती है। हवा बहुत खुशमिजाज है, उसे किसी भी बात की चिंता या फिक्र नहीं है, वह निडर होकर निर्बाध रूप से बहती है।

2. भाव – इसका भाव यह है कि बसंत ऋतु में चलने वाली यह हवा बहुत स्वतंत्र, निडर

और मस्तमौला (बिना किसी फिक्र के) है, जो बिना किसी बंधन के अपनी मर्जी से जहाँ चाहे आती-जाती है और प्रकृति में उमंग भरती है। यह हवा प्रकृति में चंचलता और नई ऊर्जा लाती है, जो सब कुछ जीवंत कर देती है। यह एक विचित्र मुसाफिर है जो कहीं रुकती नहीं, बस चलती रहती है।

3. **भाव** – केदारनाथ अग्रवाल की कविता 'बसंती हवा' की इस पंक्ति का भाव यह है कि बसंती हवा गेहूँ के खेतों में पहुँचकर तेजी से बहने लगती है, जिससे फसल में लहरें उत्पन्न होती हैं। हवा अपनी मस्ती और उत्साह में लहरों का दृश्य बनाती है, जो बसंत ऋतु संदर्भ व व्याख्या की सुहावनी और जीवंत सुंदरता को दर्शाता है।

   जब हवा गेहूँ के खेत से गुजरती है, तो पौधे हिलते हैं, जो पानी की लहरों जैसा दृश्य पैदा करता है। 'खूब मारी' हवा की तेज गति और उसकी मस्ती को दर्शाता है।

4. **भाव** – 'इसी हार को पा हिलाई न सरसों' पंक्ति केदारनाथ अग्रवाल की कविता 'बसंती हवा' से ली गई है। इसका अर्थ है कि बसंती हवा जब अलसी के खेत से हार गई (उसकी तन्मयता भंग न कर सकी), तो उसने आगे सरसों के खेत में जाकर शरारत नहीं की और सरसों को नहीं हिलाया। यह हवा की मस्ती और चंचलता को दर्शाता है, जो सरसों को बिना छेड़े आगे बढ़ जाती है। यह पंक्ति हवा के निश्चिंत और लापरवाह स्वभाव को दर्शाती है, जो किसी एक जगह न रुककर आगे निकल जाती है।

5. **भाव** – बसंत ऋतु में चारों ओर फैली हुई रंग-बिरंगी प्रकृति (खेतों में सरसों, फूल) ऐसी लग रही है जैसे प्रकृति अपनी प्रसन्नता में खिलखिलाकर हँस रही हो। यह धूप चिलचिलाती नहीं, बल्कि कोमल और प्रिय (प्यारी) है, जो बसंत के सुहावनेपन को बढ़ाती है। यह पंक्ति बसंत ऋतु के उल्लास, मस्ती और जीवंतता का एक सजीव चित्रण है, जहाँ हवा, धूप और प्रकृति सब मिलकर एक अद्भुत दृश्य बनाते हैं।

   यह पंक्ति बसंत ऋतु के सुखद, सुंदर और आनंदमयी वातावरण के प्रति कवि के प्रेम को दर्शाती है।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. फिकर
2. बस्ती
3. उतरकर
4. सरसों
5. लहलहाते

- **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. यदि मुझे एक दिन के लिए हवा बना दिया जाए, तो मैं अपने अस्तित्व को केवल बहने तक सीमित न रखूँगा, बल्कि पथिकों के जीवन का साथी बनने का प्रयास करूँगा। जब कोई पथिक लंबी यात्रा से थककर पसीने से तर-बतर हो जाएगा, तब मैं मंद समीर बनकर उसके चेहरे को छुऊँगा और उसकी थकान को धीरे-धीरे दूर कर दूँगा। धूप की तपन से झुलसते उसके कदमों को शीतलता प्रदान करूँगा, ताकि उसे अपनी राह पर आगे बढ़ने की शक्ति मिल सके। मैं कभी तेज झोंकों में उसे असंतुलित नहीं करूँगा, बल्कि उसके कदमों के साथ तालमेल बैठाकर उसे सहारा दूँगा।

   यदि कोई पथिक अकेला और उदास मन से यात्रा कर रहा होगा, तो मैं उसके आस-पास कोमल स्पर्श बनकर बहूँगा और उसे एहसास दिलाऊँगा कि वह अकेला नहीं है। पेड़ों की पत्तियों को हिलाकर मधुर सरसराहट उत्पन्न करूँगा। जिससे उसके मन में सुकून और प्रसन्नता का संचार हो। खेतों के रास्ते से गुजरते हुए मैं फसलों की सुगंध अपने साथ लेकर चलूँगा, ताकि पथिक के मन में मिट्टी की सौंधी महक से अपनापन जागे। पहाड़ी मार्गों पर चढ़ते समय मैं उसके चेहरे को ठंडक देकर उसकी थकावट कम करूँगा और रेगिस्तान की गरमी में उसे राहत पहुँचाने का हरसंभव प्रयास करूँगा।

यदि कहीं वातावरण दूषित होगा, तो मैं उसे शुद्ध करने का प्रयास करूँगा, ताकि पथिक स्वच्छ वायु में साँस ले सके। मैं फूलों की खुशबू, नदियों की नमी और हरियाली की ताजगी अपने साथ लेकर चलूँगा, जिससे पथिक के मन में नई ऊर्जा और आशा का संचार हो।

इस प्रकार, यदि मैं एक दिन के लिए हवा बनूँ, तो मेरा व्यवहार करुणा, समानता और सेवा-भाव से परिपूर्ण होगा। मैं पथिकों की राह को आसान बनाने, उनकी थकान मिटाने और उनके मन में उत्साह भरने का कार्य करूँगा। मेरा उद्देश्य केवल बहना नहीं, बल्कि मानव जीवन में आनंद, शांति और सहयोग का संदेश फैलाना होगा।

2. केदारनाथ अग्रवाल की कविता में बसंती हवा अत्यंत चंचल, निडर और स्वच्छंद है, जो महुआ, आम और अलसी के बाद जब अरहर के खेत में पहुँचती है, तो उसके अल्हड़पन और जोश को देखकर अरहर का पौधा लजा गया होगा। हवा की कोमलता और मस्ती ने उसे न केवल झुकाया, बल्कि अपनी निडरता से शर्माने पर मजबूर कर दिया, यह प्रकृति के सौंदर्य का एक संवाद है।

- **भाषा आधारित**

1. अनोखा — अध्यक्ष
   महोदया — भक्त
   चूहा — ज्ञानवान
   कवयित्री — साँपिन

2. हिमालय
   शुभारम्भ
   भानूदय
   महेश्वर
   देवर्षि

- **पर्यायवाची शब्द**

1. पवन, वायु
2. दिनकर, दिवाकर
3. मेघ, घन
4. धरा, भूमि

- **कल्पना आधारित**

1. यदि प्रकृति ने अपना कार्य करना बंद कर दिया, तो पृथ्वी पर जीवन का अस्तित्व तुरंत समाप्त हो जाएगा। हवा, पानी, मिट्टी और प्रकाश का चक्र रुकने से अकाल, रेगिस्तान और जहरीला वातावरण बन जाएगा, जिससे मनुष्य और जीव-जंतुओं के लिए साँस लेना असंभव हो जाएगा।
2. पेड़-पौधों के बिना जीवन की कल्पना एक भयावह बंजर रेगिस्तान जैसी है। ऑक्सीजन की कमी से साँस लेना दूभर हो जाएगा और भोजन (फल, सब्जी, अनाज) के अभाव में अकाल पड़ जाएगा। धरती का तापमान इतना बढ़ जाएगा कि जीवन असंभव हो जाएगा, पर्यावरण पूरी तरह प्रदूषित हो जाएगा और पारिस्थितिक संतुलन टूटने से सब कुछ समाप्त हो जाएगा।

- **खेल आधारित**

पेड़-पौधों के नाम छाँटना–

1. शीशम
2. मदार
3. खैर
4. बम्बू
5. बबूल
6. महुआ
7. नीम
8. आम
9. महोगनी
10. बरगद
11. बेल

10. घर से भी निकला करो

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- छात्र स्वयं करें।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. दो-तीन बार।

2. पहाड़ों पर जाने का।
3. अंकित और उसके मम्मी-पापा।
4. क्रिसमस की छुट्टियों में (24 दिसंबर को)।
5. ऊनी कपड़े, हस्तशिल्प तथा स्थानीय चीजें।

- **लिखित**

1. उनका पहला दिन होटल और उसकी बालकनी में बीता।
2. दूसरे दिन उन्होंने मालरोड तथा हिडिंबा मंदिर घूमे।
3. बर्फ गिरने से पहले बारिश हुई, हवा बंद हो गई, मौसम गुम-सा हो रहा था। मौसम खुलने के आसार दिख रहे थे।
4. बर्फ पर खेलने से पहले अंकित और उसकी मम्मी-पापा ने खूब सारे कपड़े पहने, मोजे पहने, दस्ताने पहने, ऊनी टोपियाँ पहनीं।
5. अंकित दस्ताने उतारकर बर्फ के गोले बना-बना कर मम्मी-पापा पर बरसाने लगा। कुछ देर बाद मम्मी-पापा भी शामिल होकर एक-दूसरे पर बर्फ के गोले दागने लगे। इस प्रकार उन्होंने बर्फबारी का आनंद लिया।

- **अपनी समझ से**

1. (क) 4. (घ)
2. (ख) 5. (ग)
3. (ग)

- **सोच-समझकर**

1. अंकित के मम्मी-पापा सर्दी से डरते थे। वे लोग कड़ाके की ठंड में कहीं नहीं जाते थे। उन्हें घर के अंदर ही बंद रहना अच्छा लगता था। इसीलिए जब अंकित के पिताजी ने पहाड़ों पर जाने का कार्यक्रम बनाया तो सुनने वालों ने आश्चर्य किया। यहाँ तक कि अंकित ने भी अनहोनी कहा। इसीलिए मेरे विचार से उनकी इस प्रकार सोच परिवर्तित होना अनहोनी की बात थी।
2. जब मम्मी और पापा ऋतुओं के मजेदार होने वाले अनुभव के बारे में बातें कर रहे होंगे और उन्हें यह एहसास हुआ होगा कि वास्तव में ऋतुओं का अपना अलग ही आनंद है, तब उनकी बातें सुनकर अंकित ने कहा होगा कि ऋतुएँ घर के अंदर नहीं आतीं, इसलिए घर से थोड़ा निकला भी करो।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. इस पंक्ति के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि उसे पहली बार ऋतुओं का वास्तविक अनुभव हुआ है। वह ऋतु परिवर्तन के आनंद को आज समझ पाया है। उसे ऋतुएँ रोचक लगने लगी हैं।
2. इस पंक्ति में बालक (अंकित) आश्चर्य कर रहा है कि मम्मी-पापा ने अचानक कैसे पहाड़ों पर जाने की योजना बना ली। उसके मन की जिज्ञासा कहीं हल्का संदेह प्रकट करती है।
3. आस-पास के लोगों की प्रतिक्रियाओं ने मम्मी-पापा के हौंसले को काफी हद तक तोड़ दिया था। लोगों ने अपने अनुभवों और आशंकाओं से अंकित के मम्मी-पापा के मन में नकारात्मक भाव भर दिए थे।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. ढेर 4. कॉफी
2. अनहोनी ही 5. छुट्टियों
3. नसीहत

- **सही-गलत**

1. (✗), 2. (✓), 3. (✓), 4. (✗), 5. (✓)।

- **पाठ से आगे**

1. यदि मुझे कहीं घूमने जाने का मौका मिला तो मैं पहाड़ों पर जाना पसंद करूँगा। वहाँ ऊँचे-ऊँचे पहाड़, बर्फ से ढकी चोटियाँ, हरे-भरे जंगल और बहती नदियाँ देखूँगा। मैं ठंडी हवा का आनंद लूँगा और प्राकृतिक सुंदरता को निहारूँगा।
2. बाहर घूमने जाने पर कभी-कभी परेशानियों तथा रहने-खाने की असुविधाओं को झेलना पड़ता है। इसके बावजूद भी बाहर घूमने

जाना चाहिए, क्योंकि इससे हमारा ज्ञान बढ़ता है, मन प्रसन्न रहता है और नए-नए अनुभव प्राप्त होते हैं।

- **भाषा आधारित**

1. पाठ में आए विदेशज शब्द हैं– नसीहत, वक्त, लोवर, रज़ाई, एकदम, क्रिसमस, नवंबर, दिसंबर, विंटर, प्री-विंटर, क्राइस्ट चर्च, होटल, अंदाजा, इलाके, मोबाइल फोन, कॉफी, रफ्तार, मजेदार आदि।
2. पाठ में आए मुहावरे और उनके वाक्य प्रयोग–
   - **हाथ बँटाना –** सहायता करना।
     वाक्य प्रयोग – हमें अपने माता-पिता के कामों में हाथ बँटाना चाहिए।
   - **गपशप करना –** व्यर्थ की बातचीत करना।
     वाक्य प्रयोग – राहुल साथियों के साथ बैठकर गपशप करता रहता है।
   - **हौंसला पस्त होना –** हिम्मत हार जाना।
     वाक्य प्रयोग – अनु पहाड़ की चोटी पर चढ़ना चाहती थी, लेकिन उसके साथियों ने उसका हौसला पस्त कर दिया।
   - **झुरझुरी होना –** भय लगना।
     वाक्य प्रयोग – कड़ाके की ठंड देखकर रामू को झुरझुरी होने लगी।
   - **मन मचलना –** आतुर होना।
     वाक्य प्रयोग – खिलौने देखकर बच्चे का मन मचलने लगा।
   - **ठहाका लगाना –** जोर से हँसना।
     वाक्य प्रयोग – गौरव की मजाकिया बातें सुनकर सब लोग ठहाका लगाने लगे।
3. (क) तेज हवाएँ चल रही थीं।
   (ख) सचमुच, बर्फ गिर रही थी।
   (ग) अंकित दस्ताने उतारकर बर्फ के गोले बनाने लगा।
   (घ) हिमपात की रफ्तार बढ़ने लगी।
   (ङ) मम्मी-पापा भागकर बालकनी में आए।
4. (क) ने (ग) और
   (ख) इसलिए (घ) किन्तु
5. (क) बर्फ के ढेरों को रौंदते हुए आगे बढ़े रहे हैं।
   (ख) यहाँ का तापमान शून्य से नीचे हो चुका था।
   (ग) मनाली में बहुत भीड़-भाड़ होगी।
   (घ) पिताजी शतरंज में मस्त हैं।
   (ङ) पहाड़ों की अनोखी दुनिया की सैर का मजा ही अनोखा था।

- **क्रियाकलाप आधारित**

1. पिछले साल गर्मियों की छुट्टियों में मैं शिमला घूमने गया। वहाँ की ठंडी हवा बहुत अच्छी लग रही थी। चारों ओर ऊँचे-ऊँचे पहाड़ और बर्फ की चोटियाँ थीं। हमने रोहतांग पास और सोलंग वैली देखी। बर्फ में खेलना और फिसलना बड़ा मजेदार था। स्थानीय भोजन बड़ा मजेदार और स्वादिष्ट था। मेरी यह यात्रा बहुत यादगारपूर्ण रही। मेरा मन बार-बार वहाँ घूमने को करता है।
2. पहाड़ों के घूमने के स्थानों की सूची–
   (i) मनाली, (ii) शिमला, (iii) मसूरी, (iv) नैनीताल, (v) दार्जिलिंग, (vi) श्रीनगर, (vii) औली तथा (viii) माउंट आबू।
3. परियोजना कार्य : घूमने का स्थान
   स्थान का नाम – शिमला
   क्या देखना चाहिए – प्राकृतिक सौंदर्य और ठंडा मौसम।
   विशेषताएँ – बर्फीली पहाड़ियाँ, सेब के बाग, साहसिक खेल, शांत वातावरण।
4. चित्र वर्णन
   यहाँ चाय के बागानों और बर्फीली पहाड़ियों के चित्र को दर्शाया गया है। यहाँ का वातावरण बड़ा ही रमणीय दिखाया गया है। चारों ओर ऊँचे-ऊँचे पहाड़ दिखाए गए हैं

जिन पर बर्फ जमी हुई है। लोग नौकायन द्वारा फूल तोड़ रहे हैं।

बायाँ चित्र : बाऐं चित्र में दो महिलाएँ चाय के बागान में काम कर रही हैं। वे पारंपरिक टोकरियाँ पीठ पर लादे हुए हैं, चाय की पत्तियाँ तोड़ रही हैं। यह दृश्य चाय की खेती और मेहनत को दर्शाता है।

दायाँ चित्र – इस चित्र में दो व्यक्ति दिखाए गए हैं। एक व्यक्ति एक छोटी नाव पर बैठा नौकायन का आनंद ले रहा है। एक महिला फूल चुन रही है। दृश्य शांत जल और प्राकृतिक सुंदरता को दर्शाता है। यह किसी झील और पहाड़ी क्षेत्र का चित्र है।

11. अनोखा खेल

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–**

आत्मीय, हास्योत्पादक, चातुर्य, विस्मित, उत्फुल्लता, निर्दयी।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. बालक और बालिका गंगा तट पर खिलवाड़ कर रहे थे।
2. भाड़ बालिका बना रही थी।
3. मनोहर नौ वर्ष का था।
4. सुरबाला द्वारा बनाये गये भाड़ में से धुआँ कहाँ से निकलेगा? यह कमी रह गई।
5. निर्जन प्रदेश में सूरज महाराज गुलाबी-गुलाबी हँसी हँस रहे थे।

- **लिखित**

1. सुरबाला अपने एक पैर पर रेत जमाकर और थोप-थोपकर एक भाड़ बना रही थी।
2. बालिका सुरबाला भाड़ बनाते-बनाते सोचती भी जाती थी– उसके ऊपर एक कुटी बनाऊँगी। वह मेरी कुटी होगी और मनोहर?..................... नहीं-नहीं वह कुटी में नहीं रहेगा। बाहर खड़ा-खड़ा भाड़ में पत्ते झोंकेगा। जब वह हार जायेगा, बहुत कहेगा, तब ही उसे अपनी कुटी के भीतर आने दूँगी।
3. सुरबाला ने दो-एक पक्के हाथ भाड़ पर लगाकर देखे– भाड़ पूरी तरह से बन गया था। माँ जिस सतर्कता और सावधानी के साथ अपने नवजात शिशु को बिछौने पर लिटाने को छोड़ती है, ठीक वैसे ही सुरबाला ने अपना पैर धीरे-धीरे भाड़ के नीचे से खींचा।
4. सुरबाला अपने भाड़ को बनाने में अटकी हुई है। मनोहर ने आव देखा न ताव बस जोर से एक लात में ही भाड़ का काम तमाम कर दिया। मानो उसने बहुत बड़ी जीत हासिल कर ली और गर्व से चिल्लाया– "सुर्रो रानी!" सुर्रो रानी चुपचाप खड़ी थी, दिल वेदना से भर गया। जिस भाड़ को उसने अपने हाथों से बनाया था और उसकी सुंदरता जिसे दिखाना चाहती थी, उसी ने भाड़ को तोड़ दिया। मनोहर के इस काम से सुरबाला व्यथित हो गयी।
5. मनोहर द्वारा बनाए भाड़ को सुरबाला ने तोड़ दिया। मनोहर अंजलि में गंगाजल लाकर भाड़ का अभिषेक करना ही चाहता था कि सुर्रो रानी ने एक लात से भाड़ के सिर को चकनाचूर कर दिया।
   भाड़ को तोड़ते ही सुरबाला खुशी से नाच उठी और प्रसन्नता के साथ मनोहर भी कहकहा लगाने लगा, क्योंकि वह सुर्रो रानी को खुश देखना चाहता था।

- **प्रत्यास्मरण**

1. बालिका ने एक-दो पक्के हाथ भाड़ पर लगाकर देखे– भाड़ अब पूरी तरह से बन गया था।

2. माँ जिस सतर्कता और सावधानी से अपने नवजात शिशु को बिछौने पर लिटाती है, ठीक वैसे ही सुरबाला द्वारा भाड़ के नीचे से पैर खींचने की क्रिया को बताया गया है।
3. बालिका प्रसन्न होकर नाच उठी क्योंकि पैर साफ निकालने पर भाड़ ज्यों का त्यों टिका रहा।
4. बालिका मनोहर को बेवकूफ लड़का मानती है, क्योंकि वह पानी से उलझ रहा है। सुरबाला द्वारा बनाया गया कारीगरीपूर्ण भाड़ नहीं देखता।

- **अपनी समझ से**

1. (ग) लकड़ी से
2. (ग) दोनों
3. (घ) सात वर्ष
4. (ख) जैनेन्द्र कुमार
5. (ख) नौ वर्ष

- **सोच-समझकर**

1. मेरे सपनों का घर सिर्फ एक इमारत नहीं होगा। मेरे लिए प्राकृतिक माहौल में एक ऐसा स्थान होगा, जहाँ मैं शांतिपूर्ण अध्ययन कर सकूँ। मैं हरे-भरे खेतों के बीच बसे एक शांत घर की कल्पना करता हूँ, जहाँ पत्तों की हल्की सरसराहट और पक्षियों की चहचहाहट प्रकृति का एक अनूठा संगम रचती है।
2. गंगा को भारत की पवित्र नदी इसलिए माना जाता है क्योंकि धार्मिक रूप से यह देवी का स्वरूप है। जो पापों का नाश करती है और मोक्ष दिलाती है, जबकि वैज्ञानिक रूप से इसके जल में बैक्टीरिया रोधी गुण और ऑक्सीजन सोखने की क्षमता होती है, जिससे यह लंबे समय तक शुद्ध रहती है। इसमें औषधीय खनिज होते हैं जो इसे शुद्ध रखते हैं, जो इसे भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिकता और जीवन का केंद्र बनाते हैं। इन सभी कारणों से गंगा नदी भारतीय जनमानस में सिर्फ एक नदी नहीं, बल्कि जीवनदायिनी, पवित्र और पूजनीय माँ के समान है।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. बालिका सोच रही थी– मनोहर अच्छा है, पर बड़ा चंचल और दंगई है।
2. तब बालिका आनन्दित होकर नाच उठी।
3. सुरबाला ने भाड़ के सिर पर अपनी कुटी भी तैयार कर ली।
4. सुरी .... ओ सुरिया! मैं मनोहर हूँ .... मनोहर! .... मुझे मारती नहीं।
5. कैसे बनाऊँ, बताओ तो।
6. भाड़ को तोड़ते ही सुरबाला रानी हँसी से नाच उठी।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. भाड़
2. भाड़ की छत
3. मूक
4. धुएँ का
5. उत्फुल्लता

- **पाठ से आगे**

1. अध्यापक की सहायता से छात्र स्वयं करें।
2. हाँ, मैंने पवित्र नदी गंगा के तट का भ्रमण किया है। सुबह के समय नदी का शांत जल, तट पर चहचहाते पक्षी, मंदिर की घंटियों की ध्वनि और ठंडी हवा ने मन को अद्‌भुत शांति और स्फूर्ति प्रदान की। बहते पानी को देखकर जीवन की निरंतरता और अपनी सारी उलझनों के बह जाने का अहसास हुआ।

- **भाषा आधारित**

1. टिकट (अंग्रेजी) + घर (हिंदी) = टिकटघर
   लाठी (हिंदी) + चार्ज (अंग्रेजी) = लाठीचार्ज
   जेल (अंग्रेजी) + खाना (फारसी) = जेलखाना
   गोता (हिंदी) + खोर (फारसी) = गोताखोर
   थाना (हिंदी) + दार (फारसी) = थानेदार।
2. (क) दंगाई (ख) विदूषक (जोकर)
   (ग) परोपकारी (घ) निर्दयी
   (ङ) निर्जन

- **कल्पना आधारित**

1. छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।
2. लंका पर विजय प्राप्त करने से पूर्व भगवान राम ने रामेश्वरम् में समुद्रतट पर उपलब्ध

बालू (रेत) से शिवलिंग का निर्माण किया। पौराणिक कथाओं के अनुसार, जब हनुमान जी कैलाश पर्वत से शिवलिंग लाने में विलंब कर रहे थे, तब शुभ मुहूर्त निकलने के डर से श्रीराम ने अपने हाथों से बालू को एकत्रित करके शिवलिंग (रामलिंगम्) बनाया। इसके बाद, श्रीराम ने मंत्रोच्चार और पूजा के साथ उसकी स्थापना की।

समुद्र सेतु के निर्माण से पहले, भगवान शिव के प्रति आभार और विजय के आशीर्वाद के लिए राम ने गंधमादन पर्वत के पास एक स्थान चुना। समुद्र के किनारे की पवित्र और नरम रेत (बालू) को एकत्रित करके उसे एक आकार (शिवलिंग के विग्रह) में ढाला गया। उसी स्थान को रामेश्वरम् कहते हैं।

- **खेल आधारित (बुद्धि परीक्षण)**

1. पुस्तक : पढ़ना :: भोजन : खाना
2. आँख : देखना :: झोंपड़ी : सोना
3. पहाड़ : ऊँचा :: नदी : गहरी/लम्बी

12. गिल्लू

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- छात्र स्वयं करें।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. लेखिका को गिल्लू घायल अवस्था में कमरे के बरामदे में मिला था।
2. लेखिका ने गिल्लू को एक डलिया पर रूई बिछाकर रखा।
3. लेखिका को मोटर दुर्घटना द्वारा चोट लगी।
4. लेखिका ने गिल्लू को मुक्त कर दिया।
5. गिल्लू को उष्णता देने के लिए लेखिका ने हीटर जलाया।

- **लिखित**

1. लेखका ने गिल्लू का उपचार करने के लिए रूई से रक्त पोंछकर पेंसिलीन का मरहम लगाया।
2. लेखिका का ध्यान आकर्षित करने के लिए गिल्लू उसके पैर तक आकर सर्र से पर्दे पर चढ़ जाता और फिर तेजी से उतरता।
3. लेखिका की अस्वस्थता के दौरान गिल्लू सिरहाने बैठकर अपने नन्हें-नन्हें पंजों से उसके सिर और बालों को हौले-हौले से सहलाता रहता।
4. एक दिन गिल्लू न कुछ खाया न बाहर गया। रात में वह झूले से उतरकर लेखिका के हाथ को अपने ठण्डे पंजों से पकड़ा। लेखिका ने उसे उष्णता देने के लिए हीटर जलाया, किन्तु प्रभात की किरण के साथ वह स्वर्ग सिधार गया।
5. गिल्लू लेखिका द्वारा पाले गए पशुओं में अपवाद इसलिए था क्योंकि उसमें गजब की समझदारी और अनोखी आदतें थीं तथा इंसानी लगाव था।

- **प्रत्यास्मरण**

1. गिलहरियों का जीवन लगभग दो वर्ष होता है।
2. गिल्लू अपनी अंतिम रात को झूले से उतरकर लेखिका के बिस्तर पर गया।
3. गिल्लू ने महादवी वर्मा की उँगली पकड़कर हाथ से चिपक गया, जैसे उसने अपने बचपन की मरणासन्न स्थिति में पकड़ा था।
4. गिल्लू को उष्णता देने के लिए लेखिका ने हीटर जलाकर उसे गर्म करने का प्रयत्न किया।

- **अपनी समझ से**

1. (ख) 2. (क)
3. (ख) 4. (ग)
5. (क)

- **सोच-समझकर**

1. लेखिका के दुर्घटनाग्रस्त होने पर गिल्लू ने खाना-पीना इसलिए बंद कर दिया होगा क्योंकि वह लेखिका को न पाकर किसी घटना का अनुमान लगा रहा होगा और उसे बैचेनी हो रही होगी क्योंकि गिल्लू लेखिका से बेहद लगाव रखता था।
2. लेखिका ने गिल्लू को घायल अवस्था में अपनाकर उसका उपचार किया, उसे आश्रय दिया। वह उसे अत्यन्त स्नेह करती थी। जब लेखिका दुर्घटनाग्रस्त हुई तब गिल्लू ने लगभग खाना-पीना छोड़ दिया और चुपचाप बैठा रहा। इससे स्पष्ट होता है कि लेखिका गिल्लू से आत्मीय भाव रखती थी तो गिल्लू भी लेखिका से लगाव रखता था।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. जब गिल्लू बाहर पेड़ों और खुले वातावरण में गया तब उसने स्वतंत्रता का अहसास किया। वह पिंजरे से बाहर आकर स्वच्छंद जीवन जी सका और राहत की साँस ली।
2. जब गिल्लू लेखिका के पास से हट जाता था तब उसे खालीपन का अहसास होता था, मानो उसका ख्याल रखने वाला कोई अपना उससे दूर हो गया हो।
3. इस पंक्ति में गिल्लू की मृत्यु का संकेत है। जब सुबह सूर्य का उदय हुआ तो उसी समय गिल्लू ने संसार से विदा ले लिया। लेखिका के शब्दों के अनुसार, मृत्यु को किसी और जीवन में जागना रह गया है। जिसका अर्थ है कि मृत्यु अंत नहीं, बल्कि एक नए जीवन की शुरुआत है।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. पेंसिलिन
2. राहत
3. काजू
4. सुराही
5. दो।

- **सही-गलत**

1. (✕), 2. (✓), 3. (✕), 4. (✓), 5. (✕)।

- **सुमेलन**

1. (ख), 2. (क), 3. (ङ), 4. (ग), 5. (घ)।

- **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. एक बार मेरे घर के पास एक घायल कबूतर गिर पड़ा। मैंने उसे उठाकर सुरक्षित स्थान पर रखा, पानी पिलाया और दवा लगाई। कुछ दिनों बाद वह स्वस्थ हो गया और उड़ गया। वह रोज मेरे आँगन में आ जाता और मेरे पास बैठ जाता। प्रेम और स्नेह से पशु-पक्षी भी अपने बन जाते हैं।
2. 'प्रेम और स्नेह से सभी को अपना बनाया जा सकता है।' समर्थन में तर्क–
   - प्रेम से मन का भय और दूरी समाप्त हो जाती है।
   - स्नेह मिलने पर मनुष्य ही नहीं, पशु-पक्षी भी विश्वास करने लगते हैं।
   - अपनापन संबंधों को मजबूत करता है।
   - प्रेम से शत्रु भी मित्र बन जाते हैं।
3. यदि लेखिका गिल्लू को घायल अवस्था में छोड़ देती तो शायद उसकी जीवन लीला वहीं समाप्त हो जाती। वह प्रेम और ममता से वंचित रह जाता और 'गिल्लू' जैसी मार्मिक कहानी का जन्म न होता।

- **भाषा आधारित**

1. (क) प्रकाश + इत = प्रकाशित
   (ख) विस्मय + इत = विस्मित
   (ग) आकर्षण + इत = आकर्षित
   (घ) सम्मान + इत = सम्मानित
   (ङ) फल + इत = फलित
   (च) सुगंध + इत = सुगंधित
2. (क) बालक, (ख) भोजन, (ग) छोटा, (घ) नयन, (ङ) गृह, (च) पास।
3. (क) पंडिताइन, (ख) चूहा, (ग) शेरनी, (घ) लेखक, (ङ) कवयित्री, (च) देवता, (छ) लोहारिन, (ज) पति, (झ) सुनारिन।
4. (क) निश्चेष्ट सा, मनकों सी, तीन-चार, चंचल-चमकीली, नन्हें से, जैस-तैसे, हौले-हौले आदि।

5. (क) हिलाकर, झूलता।
   (ख) आकर, चढ़ जाता।
   (ग) सहलाता था।
   (घ) चलाया।

- **क्रियाकलाप आधारित**

1. यदि मुझे घायल चिड़िया दिखाई दी तो–
   - मैं उसे सुरक्षित स्थान पर ले जाऊँगा।
   - पानी और हल्का आहार दूँगा।
   - उसे पूरी तरह स्वस्थ होने तक उसकी देखभाल करूँगा।

   (नोट– छात्र अपने विचार लिखें)

13. उठो धरा के अमर सपूतो

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–** स्फूर्ति, ज्योति, सुमनों, निर्माण, ध्वनियों, सुनहरी।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. इस कविता के रचनाकार द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी हैं।
2. सुमनों में मुस्कान भरने के लिए कहा जा रहा है।
3. गुन-गुन की ध्वनि भौंरे करते हैं।
4. धरती माँ की काया नई सुनहरी हो रही है।
5. सरस्वती के पावन मंदिर का रक्षक और पुजारी हर बालक है।

- **लिखित**

1. कविता में धरा के अमर सपूतों से पुन: नया निर्माण करने के लिए कहा जा रहा है।
2. विहग डाल-डाल पर बैठकर नए स्वरों में गाते हैं।
3. नूतन वीणा में नया राग, नवगान भरने के लिए कवि कह रहा है।
4. कविता में सरस्वती का मंदिर पावन बताया गया है।
5. कवि नवयुग का आह्वान करने के लिए कह रहा है।

- **प्रत्यास्मरण**

1. सरस्वती का मंदिर विद्यालय को कहा गया है।
2. बालकों को सरस्वती के मंदिर का रक्षक और पुजारी बताया है।
3. बालकों को ज्ञान का दीप जलाकर नवयुग का आह्वान करने को कहा गया है।
4. कविता में बालकों से पुन: निर्माण करने के लिए कहा गया है।

- **अपनी समझ से**

1. (ग) अमर सपूतों से
2. (ख) नवीन
3. (ख) भौंरे
4. (ख) हर बालक
5. (ख) शत-शत

- **सोच-समझकर**

1. अमर सपूत बनकर हम अपने देश के लिए हमेशा तैयार रहेंगे, अपने कर्तव्यों का पालन करेंगे और बलिदान से कभी नहीं डरेंगे।
2. भारत देश के नवनिर्माण के लिए देशवासियों को अपनी मातृभूमि की रक्षा करनी होगी, देश के लिए तन-मन-धन से समर्पित रहना होगा और देश को उन्नति के मार्ग पर ले जाने के लिए प्रयास करने होंगे।

- **भाव चर्चा**

1. "पुन: नया निर्माण करो" पंक्ति का भावार्थ है कि देश के युवाओं को नई ऊर्जा और सोच के साथ उठकर समाज और राष्ट्र का नवनिर्माण करना चाहिए, पुरानी बुराइयों को छोड़कर सकारात्मक बदलाव लाना चाहिए और हर व्यक्ति के जीवन में नई उम्मीद और खुशहाली भरनी चाहिए। यह कवि द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी द्वारा युवाओं को देश के भविष्य के लिए सक्रिय योगदान देने का एक प्रेरणादायक आह्वान है।

2. "नई-नई मुस्कान भरो" पंक्ति का भावार्थ है कि देश के युवाओं को पुरानी निराशा और उदासी को त्यागकर, नई सोच, ऊर्जा और उमंग के साथ देश के नागरिकों (मुरझाए फूलों) के चेहरों पर खुशी और आशा की मुस्कान लानी चाहिए, ताकि एक नए, समृद्ध और विकसित युग का निर्माण हो सके। यह पंक्ति देश के नवनिर्माण और सकारात्मक बदलाव लाने का आह्वान करती है।
3. "नया राग, नव गान भरो" पंक्ति का भावार्थ है कि नए युग के आसमान पर नए विचारों, नई सोच और नई ऊर्जा के साथ देश के पुनर्निर्माण में लग जाओ, पुराने अंध-विश्वासों और आलस्य को त्यागकर जीवन में नया उत्साह और नई प्रेरणा भरो, जिसका अर्थ है कि नई दुनिया के लिए नया संगीत और नई धुन रचो, जिसका श्रेय द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी की कविता को जाता है।
4. "गुंजित जग उद्यान करो" पंक्ति का भावार्थ है कि कवि चाहता है कि कविताओं, अच्छे विचारों और मंगलमय ध्वनियों से पूरे संसार रूपी बगीचे (जग-उद्यान) को गूँजने, सुंदर और सकारात्मक बना दिया जाए, ताकि देश के युवा नई ऊर्जा और उत्साह के साथ उठकर देश का निर्माण करें।
5. इस पंक्ति का अर्थ है कि समय-समय पर जो पुराने और मुरझाए फूल (सुमन) होते रहे हैं, उनमें नई-नई मुस्कानें और खुशियाँ भरनी चाहिए। यानि पुराने दु:खों और कठिनाइयों को छोड़कर नए उत्साह और उमंग के साथ जीवन को सजाना चाहिए।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. जीवन
2. अमर
3. डाल-डाल
4. वीणा
5. दीपक।

- **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. यदि हमको देश के विकास कार्यों के लिए प्रोत्साहित किया जाता है तो हम सबसे पहले संकल्प लेंगे कि जिम्मेदार नागरिक होने के नाते देश के विकास में योगदान से पीछे न हटूँ। अपने देश के विकास के लिए मैं एक जिम्मेदार नागरिक बनकर शिक्षा, स्वच्छता और स्वदेशी को बढ़ावा देकर योगदान दूँगा। जहाँ मैं ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन करूँगा, बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दिलाऊँगा और आत्मनिर्भर भारत के तहत स्थानीय उत्पादों को प्राथमिकता दूँगा, साथ ही डिजिटल साक्षरता और पर्यावरण के लिए जागरूकता फैलाऊँगा, ताकि छोटे-छोटे प्रयास मिलकर देश को प्रगति की ओर ले जा सकें।
2. नव-निर्माण से भारत का भविष्य उज्ज्वल और सशक्त होगा, जहाँ डिजिटल क्रांति, तकनीकी आत्मनिर्भरता, आर्थिक महाशक्ति और सामाजिक समरसता के साथ विकसित भारत के लक्ष्य को हासिल किया जायेगा, जिससे हर नागरिक को शिक्षा, स्वास्थ्य और समान अवसर मिलेंगे, यह युवा शक्ति, नवाचार और सामूहिक प्रयासों पर आधारित एक 'आत्मनिर्भर' और वैश्विक नेतृत्व वाला राष्ट्र होगा, जो चुनौतियों (जैसे- गरीबी असमानता) को अवसरों में बदल देगा।

- **भाषा आधारित**

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा - सरस्वती,
   जातिवाचक संज्ञा - पुजारी, सपूत, धरती, धरा, फूल, रक्षक, बालक।
   भाववाचक संज्ञा - मुस्कान।
2.

शब्द	विलोम शब्द
रक्षक	भक्षक
अशुभ	शुभ
सजीव	निर्जीव
मृत्यु	जन्म
निराशा	आशा
अज्ञान	ज्ञान

3. अनेक शब्द के लिए एक शब्द –
   (क) अमर,
   (ख) रक्षक/सैनिक

(ग) चित्रकार
(घ) कवयित्री।

4. धीरे-धीरे, बार-बार, रोते-रोते, कुछ-कुछ, पल-पल, साथ-साथ।

5. | **विशेषण** | **विशेष्य** |
|---|---|
| वीर | सपूतो |
| क्षीण | प्राण |
| सुनहरी | किरण |
| नव | निर्माण |
| सुंदर | वीणा |
| भव्य | मंदिर |

6. **शब्दों के तुकान्त**
करो – धरो, मरो
पाते – खोते
उधर – इधर
हमारी – तुम्हारी
माया – छाया
सावन – मनभावन

- **कल्पना आधारित**

1. यदि इस सृष्टि में पशु-पक्षी न होते, तो पृथ्वी एक नीरस, असंतुलित और निर्जीव स्थान बन जाती; खाद्य-शृंखला टूट जाती, परागण रुक जाता जिससे फसलें नष्ट होतीं, कचरा-प्रबंधन मुश्किल होता और प्राकृतिक सौन्दर्य और जैव-विविधता खत्म हो जाती, जिससे मानव जीवन भी कठिन और अंततः असंभव हो जाता, क्योंकि ये जीव प्रकृति के संतुलन और हमारे अस्तित्व के लिए अनिवार्य हैं।
2. अगर पेड़-पौधे बोल पाते, तो दुनिया अद्भुत और थोड़ी डरावनी भी होती; वे हमें ऑक्सीजन, फल और छाया देने के बदले अपनी पीड़ा (काटने का दर्द) बताते, हमें प्रदूषण रोकने को कहते और जीवन का असली मतलब सिखाते, जिससे शायद हम प्रकृति के करीब आते और वनों की कटाई रुक जाती, लेकिन हर डाल-पत्ती की चीख से हमारी शांति भंग हो जाती और हमें उनकी जरूरतों (जैसे– कचरा नहीं, खाद चाहिए।) को समझना पड़ता, जिससे हम धरती के साथ एक गहरा रिश्ता बनाते।

14. परीक्षा

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–** स्मृति, संध्या, वात्सल्य, कृपादृष्टि, सौभाग्य, कर्मचारियों

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. देवगढ़ रियासत के दीवान का नाम सरदार सुजान सिंह था।
2. आवेदन में सबसे अधिक संख्या वाले ग्रेजुएट लोग थे।
3. किसान की गाड़ी में अनाज भरा हुआ था।
4. प्रातःकाल से ही उम्मीदवार अपनी किस्मत का फैसला सुनने का इन्तजार कर रहे थे।
5. 'परीक्षा' कहानी के लेखक प्रेमचन्द हैं।

- **लिखित**

1. दीवान सुजानसिंह ने परमात्मा की याद आने पर महाराज से विनती की कि महाराज अब मेरी अवस्था भी ढल गई है, राजकाज सँभालने की शक्ति नहीं रही। कहीं भूल-चूक हो जाए तो बुढ़ापे में दाग लगे। सारी जिंदगी की नेकनामी मिट्टी में मिल जाएगी। इसलिए दीवान पद से मुक्ति दे दी जाए।
2. 'परीक्षा' कहानी के आधार पर उम्मीदवार अपनी बुद्धि के अनुसार अच्छे रूप में दिखाने की कोशिश करता था। मिस्टर 'अ' नौ बजे दिन तक सोया करते थे परंतु आजकल वे बगीचे में टहलते हुए उषा का दर्शन करते थे। मिस्टर 'द', 'स' और 'ज' से उनके घरों पर नौकरों की नाक में दम था, लेकिन ये सज्जन आजकल 'आप' और 'जनाब'

के बगैर नौकरों से बातचीत नहीं करते थे। मिस्टर 'ल' को किताबों से घृणा थी, परन्तु आजकल वे बड़े-बड़े ग्रंथ देखने-पढ़ने में डूबे रहते थे। जिससे बात कीजिए, वह नम्रता और सदाचार का देवता बना मालूम पड़ता था।

3. चोटिल खिलाड़ी ने किसान से कहा, "मैं तुम्हारी गाड़ी निकालने में कुछ मदद कर दूँ।" किसान ने देखा– एक गठे हुए बदन का लम्बा आदमी सामने खड़ा है। झुककर बोला, "हुजूर, मैं आपसे कैसे कहूँ?" युवक ने कहा, "मालूम होता है, तुम यहाँ बड़ी देर से फँसे हो।" अच्छा तुम गाड़ी पर जाकर बैलों को साधो, मैं पहियों को ढकेलता हूँ, अभी गाड़ी ऊपर चढ़ जायेगी।
4. अन्त में दीवान पद के लिए रियासत के पंडित जानकीनाथ-सा को चुना गया।
5. दीवान सुजानसिंह के चरित्र की चार विशेषताएँ –

   1. ईश्वर में आस्थावान – चालीस साल तक दीवान पद को सँभालने के बाद ईश्वर का नाम जपने के लिए स्वत: ही पद त्याग कर दिया। **2. स्वामी भक्ति –** देवगढ़ के महाराज द्वारा दिए गए आदेश का पालन करने के बाद ही दीवान पद का त्याग किया। **3. अनुभवशील एवं नीतिकुशल –** सरदार सुजानसिंह नीतिकुशल एवं अनुभवशील थे, तभी तो दीवान के चुनाव का जिम्मा स्वीकार कर लिया। **4. निपुण पारखी –** सैकड़ों उम्मीदवारों में से पंडित जानकीनाथ का चुनाव बड़ी ही पारखी नजर से किया।

- **प्रत्यास्मरण**

1. सरदार सुजानसिंह देवगढ़ रियासत के दीवान थे।
2. सरदार सुजानसिंह ने चालीस वर्ष महाराज की सेवा की।
3. सरदार सुजानसिंह परमात्मा का ध्यान करने के लिए पद से हटना चाहते थे।
4. राजा सरदार सुजानसिंह का आदर इसलिए करते थे कि वे अनुभवशील एवं नीतिकुशल थे।

- **अपनी समझ से**

1. (घ) परमात्मा की   2. (ख) विज्ञापन
3. (क) मंदाग्नि वाले   4. (ग) दोनों
5. (ग) दोनों

- **सोच-समझकर**

1. यदि घायल खिलाड़ी (सुजानसिंह का छिपा हुआ उम्मीदवार) मदद न करता, तो कीचड़ और चढ़ाई के कारण अनाज से भरी बैलगाड़ी नाले से नहीं निकल पाती। किसान को पूरी रात वहीं फँसे रहना पड़ता, मेहनत व्यर्थ जाती और शायद जानवर भी भूख से थक जाते।
2. देवगढ़ के दीवान पद के लिए योग्य उम्मीदवार खोजने हेतु सरदार सुजानसिंह द्वारा एक महीने की परीक्षा ली गई, जिसमें उम्मीदवारों ने स्वयं को सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए सुबह जल्दी उठना, पुस्तकें पढ़ना, गरीबों की सहायता करने का नाटक, नम्र व्यवहार और झूठा दिखावा जैसे अनेक प्रयत्न किए।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. **भावार्थ –** "गहरे पानी में पैठने से ही मोती मिलता है" एक प्रसिद्ध कहावत है। इसका गहरा अर्थ है कि जीवन की सफलता या मूल्यवान लक्ष्य मेहनत, संघर्ष और जोखिम उठाने के बाद ही हासिल होते हैं। किनारे बैठकर (डरकर) कुछ नहीं मिलता, कठिनाइयों में उतरना ही पड़ता है। यह लोकोक्ति हमें आलस्य और भय को छोड़कर लगातार प्रयास (पुरुषार्थ) करने की प्रेरणा देती है, क्योंकि मेहनत ही जीवन का वास्तविक 'मोती' है।
2. **भावार्थ –** "इन बगुलों में हंस कहाँ छिपा हुआ है?" मुंशी प्रेमचंद की कहानी 'परीक्षा' से ली गई है। इसका भावार्थ है कि साधारण

या आडम्बरपूर्ण लोगों (बगुलों) की भीड़ में कोई एक व्यक्ति विशिष्ट प्रतिभा, ईमानदारी और उत्तम गुणों (हंस) वाला है, जिसे अनुभवी व्यक्ति (बूढ़ा जौहरी, सुजानसिंह) परख रहा है। यहाँ बगुले सामान्य, चापलूस या दिखावा करने वाले लोगों का प्रतीक है, जबकि हंस गुणी, शांत और सज्जन व्यक्ति का प्रतीक है। यह पंक्ति एक सूक्ष्म निरीक्षण को दर्शाती है, जहाँ बाहरी व्यवहार के बजाय आंतरिक गुणों (दया, हिम्मत) को महत्त्व दिया जा रहा है।

- **वाक्य किसने किससे कहे**

	किसने कहे?	**किससे कहे?**
1.	सुजानसिंह ने	महाराज से
2.	घायल खिलाड़ी ने	किसान से
3.	युवक ने	किसान से
4.	सरदार सुजानसिंह ने	उम्मीदवारों से

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. चालीस साल
2. कर्तव्य का अधिक
3. हाथों की सफाई
4. अकेले छोड़कर किसान
5. राजा साहब का दरबार

- **सही-गलत**

1. (✗), 2. (✓), 3. (✓), 4. (✓), 5. (✓)।

- **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. यदि मुझे किसी रियासत का दीवान बना दिया जाए, तो मेरा मुख्य उद्देश्य पारदर्शी शासन, समानता और प्रजा-कल्याण होगा। मैं शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं को मुफ्त और सुलभ बनाने, किसानों के लिए बेहतर नीतियाँ, भ्रष्टाचार मुक्त प्रशासन तथा कृषि, व्यावसायिक सुधारों पर जोर दूँगा ताकि राज्य को समृद्ध और आत्मनिर्भर बनाया जा सके।

जनता के लिए मेरी कार्ययोजना –

1. मेरा मुख्य लक्ष्य एक ऐसा 'राम राज्य' स्थापित करना होगा जहाँ प्रजा डरे नहीं, बल्कि राजा दीवान की सलाह से प्रगति करे।

2. यदि मुझे कक्षा का मॉनीटर चुनने को कहा जाए, तो मैं उस बच्चे का चुनाव करूँगा जो पढ़ाई में अच्छा हो, सबसे प्यार से बात करता हो, और पढ़ाई तथा काम पूरा करने में दूसरों की मदद करता हो। इसके लिए हम उसे कुछ दिन मॉनीटर का कार्य देकर परख सकते हैं।

- **भाषा आधारित**

1. **शब्दों के पर्यायवाची लिखिए–**

मुल्क – सूबा, प्रांत, देश

ग्रंथ – पोथी, पुस्तक, रचना

साहस – हिम्मत, बहादुरी, वीरता

किसान – कृषक, हलधर, काश्तकार

दया – तरस, रहम, कृपा

2. **विग्रह पदों का समास**

(क) डाकगाड़ी

(ख) पाठशाला

(ग) रसोईघर

(घ) गुरुदक्षिणा

(ङ) हथकड़ी

- **उचित विराम चिह्न**

युवक ने हँसकर कहा, ''अब मुझे कुछ इनाम देते हो?'' किसान ने गंभीर भाव से कहा, '़नारायण चाहेंगे तो दीवानी आपको ही मिलेगी।'' युवक ने किसान की तरु गौर से देखा। उसके मन में एक संदेह हुआ, क्या यह सुजानिंसह तो नहीं हैं ? आवाज मिलती है, चेहरा-मोहरा भी वही। किसान ने भी उसकी ओर तीव्र दृष्टि से देखा। शायद उसके दिल के संदेह को भाँप गया। मुस्कराकर बोला, ''गहरे पानी में पैठने से ही मोती मिलता है।''

अन्ततः परीक्षा का महीना पूरा हुआ। चुनाव के परिणाम का दिन आ पहुँचा। उम्मीदवार प्रातःकाल से ही अपनी किस्मत का फैसला सुनने के लिए उत्सुक थे। दिन काटना पहाड़ हो गया। प्रत्येक के चेहरे पर आशा और निराशा के रंग आते थे। नहीं मालूम, आज किसके नसीब जागेंगे। न जाने किस पर लक्ष्मी की कृपादृष्टि होगी।

- **कल्पना आधारित**

1. 'परीक्षा' कहानी में सुजानसिंह द्वारा पंडित जानकीनाथ को नया दीवान घोषित करने के बाद, दरबार में खुशी का माहौल रहा होगा। जानकीनाथ की ईमानदारी और दयालुता के लिए राजा ने उन्हें सम्मानित किया, होगा सुजानसिंह का भव्य विदाई समारोह हुआ, और प्रजा ने नए दीवान को सहर्ष स्वीकार कर लिया होगा। जानकीनाथ ने पहले दीवान की तरह ही प्रजा की सेवा जारी रखी होगी।
2. मुंशी प्रेमचंद की कहानी 'परीक्षा' में दीवान सुजानसिंह द्वारा निकाला गया विज्ञापन एक क्रांतिकारी कदम था, जिसने पूरे मुल्क में खलबली मचा दी। यह विज्ञापन इस मायने में अनोखा था कि उसमें 'दीवान' जैसे उच्च पद के लिए कोई शैक्षणिक योग्यता या उम्र की सीमा नहीं थी, बल्कि सिर्फ 'सज्जनता' और चरित्र की परीक्षा होनी थी।

- **खेल आधारित (बुद्धि परीक्षण)**

चित्र देखकर छात्र स्वयं हल करें।

15. तीन शर्तें

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- **शुद्ध लिखो और बोलो–** पोषण, शर्म, बारिश, यकीन, मुताबिक, कुर्सियाँ, कर्कश, विवश।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. माँ विकलांग थी और पिताजी पहले ही दुनिया छोड़ चुके थे।
2. उस रोज सुबह से तेज बारिश हो रही थी।
3. बाबू ने तीसरी शर्त में सौ रुपये देने को कहा था।
4. काम छोड़कर भागने का विचार मन में आने पर बालक की नजरों के सामने अपनी माँ की छवि आई।
5. काम से लौटते समय बालक की माँ को कार ने टक्कर मार दी, जिससे दोनों टाँगें काटनी पड़ीं।

- **लिखित**

1. बालक को माँ और अपना पेट भरने के लिए भीख माँगना शुरू करना पड़ा।
2. लेखक ने जिस कमरे में प्रवेश किया, उसकी हालत बहुत खराब थी। कमरा किसी 'कबाड़खाने' जैसा लग रहा था। फर्श पर हर तरफ रेत फैली हुई थी और चारों ओर मकड़ी के बड़े-बड़े जाले थे। कोने में धूल से सनी एक मेज और दो उल्टी पड़ी कुर्सियाँ थीं। बीचों-बीच एक छोटी और खाली अलमारी थी। दीवार पर धूल से ढकी एक घड़ी टंगी थी।
3. दूसरी शर्त के अनुसार बालक को बाबू के साथ घर के भीतर जाना था।
4. बाबू की तीन शर्तों के पीछे रहस्य इस प्रकार हैं- बाबू की पहली शर्त का अर्थ था कि मार्ग में बाधाएँ आने पर भी निरंतर आगे बढ़ते रहना, दूसरी शर्त का अर्थ नया सीखने और अनुभव प्राप्त करने की कोशिश करना और तीसरी शर्त समय के नियोजन तथा कड़ी मेहनत के महत्व को दर्शाती थी।
5. बालक के चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं–

(अ) परिश्रमी और लगनशील–वह कमरे की सफाई और सजावट पूरी निष्ठा और कड़ी मेहनत से करता है।

(ब) चतुर और सूझबूझ वाला–उसने अपनी बुद्धि का प्रयोग करके उपलब्ध चीजों से ही कमरे को बहुत सुंदर ढंग से सजाया।

(स) सच्चा आज्ञाकारी–बाबूजी द्वारा दी गई तीनों शर्तों और उनके अर्थों की 'गाँठ बाँधकर' उसने जीवनभर उनका पालन किया।

(द) स्वाभिमानी–कहानी के अंत में पता चलता है कि उसने उन सीखों को अपनाकर जीवन भर मेहनत की और कभी किसी के आगे हाथ नहीं फैलाया।

- **प्रत्यास्मरण**

1. बालक ने आजतक तीनों शर्तों की गाँठ को नहीं खुलने दिया।
2. बालक ने अपना जीवन निर्वाह गली के नुक्कड़ पर रेहड़ी लगाकर, कभी पतंग, कभी होली के रंग, तो कभी बच्चों के खिलौने बेचकर किया।
3. बाबू की तीन शर्तों ने बालक की जिंदगी बदल दी थी।
4. गद्यांश के अनुसार, वही व्यक्ति सफल होता है, जो सही अवसर को पहचान जाता है।

- **अपनी समझ से**

सही विकल्प–1. (क) 2. (ख) 3. (घ) 4. (क) 5. (घ)।

- **सोच-समझकर**

1. ''बाबू दो शर्तें जीती हैं, तीसरी हारना नहीं चाहूँगा।'' यह कथन बालक की दृढ़ इच्छा शक्ति, आत्मविश्वास और कड़ी मेहनत से जीतने के संकल्प को दर्शाता है। इससे बालक में कभी हार न मानने का साहस और अपनी क्षमता पर अटूट विश्वास प्रकट होता है। वह जीत को भाग्य पर नहीं बल्कि अपने प्रयासों पर निर्भर मानता है।
2. सफलता का मूल मंत्र सही अवसर को पहचान कर उस पर अमल करना है। लेखक ने बाबू जी की तीन शर्तों–निरंतर आगे बढ़ना, कभी न रुकना और कड़ी मेहनत करना–को अपने जीवन में उतारा। हर व्यक्ति के जीवन में एक विलक्षण क्षण आता है; जो व्यक्ति उस अवसर को पहचान कर आलस्य त्याग देता है और समय की कद्र करता है, वही जीवन में वास्तविक सफलता प्राप्त करता है।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. इस पंक्ति का प्रयोग अत्यधिक भूख और बेबसी की स्थिति को दर्शाने के लिए किया गया है। यहाँ 'गहरा खाली कुआँ' एक महावरे की तरह उपयोग हुआ है जिसका मतलब है कि व्यक्ति इतना भूखा है कि उसे अपने पेट में एक खालीपन या गहराई महसूस हो रही है जिसे भरना नामुमकिन सा लग रहा है। लेखक के घर में खाने का एक दाना भी नहीं था और उसकी जेब बिलकुल खाली थी। यह पंक्ति उसकी इसी दयनीय स्थिति और भोजन की तीव्र आवश्यकता को प्रकट करती है।
2. जब बाबू लेखक के सामने बीस रुपये और सौ रूपये के नोट रखकर पूछते हैं कि ''कौन सा बड़ा है?'', तो लेखक तुरंत सौ रुपये के नोट की ओर इशारा कर देता है। बाबू लेखक की लालच और विवशता को तुरंत भाँप लेते हैं। वे मुस्कुराते हुए उसे सौ रुपये देने का प्रस्ताव रखते हैं, लेकिन एक कठिन शर्त के साथ-आधे घंटे में धूल से भरे उस विशाल कमरे की सफाई। लेखक पहले तो क्रोधित होता है, लेकिन फिर सौ रुपये जीतने के मोह में अपनी विवशता को स्वीकार कर चुनौती मान लेता है। यह बाबू की परखने की शक्ति और लेखक की आर्थिक मजबूरी के बीच के द्वंद्व को दर्शाता है।
3. बाबूजी द्वारा दी गई तीन शर्तें केवल शब्द नहीं थे, बल्कि जीवन जीने के अनमोल सूत्र थे। लेखक ने इन शर्तों को अपनाकर अपने जीवन की दिशा ही बदल दी। बाबूजी की पहली शर्त का अर्थ था निरंतरता और साहस। दूसरी शर्त हमें सिखाती है कि सफलता कोई अंतिम पड़ाव नहीं है और तीसरी शर्त परिश्रम के फल और समय के सदुपयोग पर जोर देती है।

   लेखक के लिए ये तीन शर्तें, 'सफलता के रहस्य' बन गईं। उन्होंने इन सिद्धान्तों को गाँठ बाँध लिया, जिससे न केवल उनकी आर्थिक स्थिति सुधरी, बल्कि वे एक स्वाभिमानी और सफल इंसान बने। इन शर्तों ने उन्हें

सिखाया कि सही अवसर को पहचानकर और कड़ी मेहनत करके कोई अपनी तकदीर बदल सकता है।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. पालन-पोषण,
2. शर्त,
3. शर्त,
4. गाँठ,
5. विलक्षण।

- **सत्य-असत्य**

1. (×), 2. (✓), 3. (×), 4. (×), 5. (✓)।

- **क्रम संयोजन**

1. (3), 2. (6), 3. (7), 4. (1), 5. (5), 6. (4), 7. (2)।

- **पाठ से आगे**

मन के विचार

1. समय धन से भी ज्यादा कीमती है; क्योंकि यदि धन को खर्च कर दिया जाए तो यह वापस प्राप्त किया जा सकता है हालाँकि, यदि हम एक बार समय को गँवा देते हैं, तो इसे वापस प्राप्त नहीं कर सकते हैं, समय बिना किसी रुकावट के निरंतर चलता रहता है। यह कभी किसी की प्रतीक्षा नहीं करता है।

   इसी प्रकार समय के साथ जीवन में मिले अवसर को छोड़ दिया तो फिर आपको अवसर मिलने की संभावना क्षीण हो जाती है, यानिकि हो सकता है अवसर मिले और नहीं मिले। इसीलिए यह सच है कि समय और अवसर का प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में बहुत महत्व है।

2. यह कथन बिल्कुल सत्य है कि, ''जो सही अवसर को पहचान जाता है, वही सफल होता है।'' सफलता केवल कड़ी मेहनत का परिणाम नहीं बल्कि सही समय पर सही निर्णय लेने (दूरदर्शिता) का परिणाम है। अवसर हमेशा दस्तक देते हैं; लेकिन उन्हें पहचानने के लिए सजग मन की आवश्यकता होती है।

   यदि आप आए अवसर का लाभ उठाने के लिए मानसिक और कौशल रूप से तैयार नहीं हैं, तो वह हाथ से निकल जाएगा। सफल लोग निरंतर सीखते रहते हैं, ताकि जब सही समय आए, तो पूरी तरह से तैयार हों।

   अंततः सफलता किसी रहस्यमयी जादू का नाम नहीं है। यह जागरूकता, तत्परता और साहस का मिश्रण है। जो व्यक्ति अपने परिवेश और परिस्थितियों को भाँप कर सही समय पर सही कदम बढ़ाता है, वही इतिहास रचता है।

- **भाषा आधारित**

1. नुक्ता का प्रयोग–

(क) वज़ह,
(ख) तेज़,
(ग) ज़ाहिर,
(घ) साफ़,
(ङ) आवाज़,
(च) ज़िद,
(छ) फ़ैसला
(ज) मंज़िल

2. विपरीतार्थक अथवा विलोम शब्द–

(क) स्वस्थ,
(ख) बेशर्म,
(ग) बुरा,
(घ) बद्दुआ,
(ङ) आसान,
(च) मूर्ख,
(छ) मधुर,
(ज) असफल।

3. मुहावरों का अर्थ और वाक्य प्रयोग–

(क) **अर्थ–**बहुत अधिक भयभीत या डर जाना।

वाक्य प्रयोग–पुलिस आते देख चोर थर-थर काँपने लगा।

(ख) **अर्थ–**शाबासी देना या प्रशंसा करना।

वाक्य प्रयोग–कक्षा में प्रथम आने पर शिक्षक ने रोहित की पीठ थपथपाई।

(ग) **अर्थ**–आश्चर्यचकित या हैरान रह जाना।

वाक्य प्रयोग–आसमान में वायु सेना की कलाबाजी देखकर लोगों की आँखें फटी की फटी रह गईं।

(घ) **अर्थ**–किसी बात को दृढ़ता से याद रखना।

वाक्य प्रयोग–माँ ने अपने बच्चों को सलाह दी कि बड़ों का सम्मान हमेशा करना चाहिए, इस बात को वे गाँठ-बाँध लें।

(ङ) **अर्थ**–कही हुई बात या वादे से पीछे हट जाना या इन्कार कर देना।

वाक्य प्रयोग–राकेश ने अपने दोस्त से उधार पैसे लिये, लेकिन समय आने पर वह अपनी बात से मुकर गया।

(च) **अर्थ**–डर जाना, भयभीत होना।

वाक्य प्रयोग–भीषण सड़क दुर्घटना में घायल हुए व्यक्ति को देखकर सड़क पर खड़े सभी लोग सहम गए।

4. **उचित विराम चिह्न**–

मुझे विश्वास हो गया कि मैं वह सौ रुपये भी जीत चुका हूँ। मेज़, कुर्सियाँ, अलमारी और चारपाई ठीक तरीके से लगाकर अपनी बुद्धि के अनुसार मैंने कमरे को सजा दिया। ठीक आधे घंटे बाद कमरे में आए। कमरा देखकर उनकी आँखें तो फटी-की-फटी रह गईं। पास आकर उन्होंने मेरी पीठ थपथपाई और बोले–''क्या तुम्हें मेरी इन तीनों शर्तों के पीछे छिपा मतलब समझ आया?'' मैंने कहा, ''हाँ, शर्त जीतने के एक सौ बीस रुपये।'' बाबू बोले–''नहीं, उनका मतलब पैसा नहीं है।'' मेरी पहली शर्त का मतलब था–''चाहे कैसी भी परिस्थिति हो पर जीवन में आगे बढ़ते जाओ। मंज़िल तक ज़रूर पहुँचोगे।'' दूसरी शर्त का मतलब था–''मंज़िल पर रुको मत, कुछ नया करने की कोशिश करते रहो। जिससे डर लगे उसे तो जरूर करो। हर बार एक नया अनुभव मिलेगा।'' तीसरी शर्त का मतलब था–''मेहनत सदैव रंग लाती है। यदि समय का निर्धारण करके काम करोगे तो सफलता अवश्य मिलेगी।''

5. **वर्ण विच्छेद**

(क) ब् + अ + द् + ल् + आ + व + अ।

(ख) भ् + इ + ख् + आ + र् + ई।

(ग) न् + इ + क् + आ + ल + अ + न् + ए।

(घ) म् + अ + ह् + अ + त् + त् + व् + अ + प् + ऊ + र् + अ + न् + अ्

(ङ) व् + इ + ल् + अ + क् + ष् + अ + ण् + अ।

- **क्रियाकलाप आधारित**

छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं करें।

16. क्या निराश हुआ जाए

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- छात्र स्वयं करें।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. समाचार-पत्र ठगी, डकैती, चोरी, तस्करी और भ्रष्टाचार के समाचारों से भरे रहते हैं।
2. सच्चाई भीरू और बेबस लोगों के हिस्से में पड़ी है।
3. कोटि-कोटि दरिद्रजनों की स्थिति को उन्नत और सुदृढ़ करने के लिए कायदे और कानून बनाए गए हैं।
4. टिकट बाबू ने लेखक के बाकी रह गए नब्बे रुपये उन्हें डिब्बे में ढूँढ़कर बड़ी विनम्रता के साथ आकर वापस किए।
5. पाठ में जिन महापुरुषों के नाम आए हैं, वे हैं– मदनमोहन मालवीय, तिलक जी, गाँधी जी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर।

- **लिखित**

1. जीवन के महान मूल्यों के प्रति लोगों की आस्था इसीलिए हिलने लगी है क्योंकि वर्तमान में ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा है।
2. दोषों का पर्दाफाश करना तब बुरा रूप बन जाता है, जब गलत पक्ष को उद्‌घाटित करके रस लिया जाता है।
3. टिकट लेते समय लेखक ने टिकट बाबू को दस रुपये की बजाय सौ रुपये दे दिए।
4. एक बार लेखक अपने परिवार के साथ एक बस में यात्रा कर रहा होता है। बस अपने गन्तव्य से पहले निर्जन स्थान पर खराब हो जाती है। कंडक्टर दूसरी बस लाने चला जाता है। यात्रियों को लगता है, उन्हें ठगा गया है और वे ड्राइवर को बंधक बनाकर मारने को आमादा हो जाते हैं तभी.... कंडक्टर दूसरी बस लेकर आ जाता है। इस बात ने लेखक के विश्वास को और मजबूत कर दिया।
5. लेखक के अनुसार, बुराई इसमें है जब किसी व्यक्ति के आचरण के गलत पक्ष को उजागर कर उसमें रस लिया जाता है। जिस प्रकार बुराई में रस लिया जाता है। उसी प्रकार अच्छाई के पक्ष को उजागर कर उसमें उतना ही रस न लेना और भी बुरी बात है।

- **प्रत्यास्मरण**

1. लेखक के अनुरूप जीवन तब नश्वर हो जाएगा, जब लोगों का लोगों से विश्वास उठ जाएगा। जब लोग केवल उन्हीं बातों का हिसाब लेकर चलेंगे जिन पर धोखा मिला है।
2. ऐसी घटनाएँ भी कम नहीं हैं, जब लोगों ने अकारण ही दूसरों की सहायता की हो, निराश मन को ढाँढ़स दिया हो और हिम्मत बँधाई हो।
3. रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने प्रार्थना की है कि यदि मुझे संसार में केवल नुकसान ही उठाना पड़े, धोखा ही खाना पड़े, तब भी प्रभु मुझे ऐसी शक्ति देना कि मैं तुममें संदेह न करूँ।
4. लेखक के अनुसार ऐसी घटनाएँ कम नहीं हैं, जब लोगों ने दूसरों की मदद न की हो।

- **अपनी समझ से**

1. (ख) 4. (घ)
2. (घ) 5. (घ)
3. (घ)

- **सोच-समझकर**

1. देश में कायदे और कानून इसलिए बनाए गए हैं ताकि सामाजिक व्यवस्था बनी रहे, अन्याय पर रोक लगे और सबको न्याय मिल सके। देश के दरिद्रजनों की अवस्था को सुधारा जा सके। देश की आर्थिक स्थिति को सुधारा जा सके।
2. प्रस्तुत पाठ से हमें यह शिक्षा मिलती है कि लोगों को सकारात्मक पक्ष को अपनाना चाहिए। यदि केवल उन्हीं बातों का हिसाब रखोगे जिनमें धोखा खाया है तो जीवन कष्टकर हो जाएगा।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. लोग सिद्धांत रूप में ईमानदारी मानते हैं, लेकिन निजी स्वार्थ और सुख-सुविधा के कारण उन पर चलना मुश्किल होता है। कभी-कभी परिवार, पद या सामाजिक दबाव के कारण व्यक्ति अपने आदर्शों से भटक जाता है।
2. भारतवर्ष सदा कानून को धर्म के रूप में देखता आ रहा है, जहाँ धर्म को धोखा नहीं दिया जा सकता। हालाँकि, आज कानून और धर्म में अंतर कर दिया गया है, जिससे लोग कानून की खामियों का फायदा उठा रहे हैं। इसके बावजूद, सच्चाई और ईमानदारी पूरी तरह नष्ट नहीं हुई है।

3. "दूसरों के दोषों का पर्दाफाश करना बुरी बात नहीं है, लेकिन बुराई में रस लेना बुरी बात है।" का अर्थ है कि दोष उजागर करना सुधार के लिए सही है, पर उसे स्वार्थ के लिए उछालना गलत है। यह समाज में नकारात्मकता फैलाता है और इंसान की अच्छाइयों को अनदेखा कर उसे नीचा दिखाता है।

- **सही–गलत**

1. (✗), 2. (✓), 3. (✓), 4. (✓), 5. (✗)।

- **क्रम–संयोजन**

1. (8), 2. (3), 3. (6), 4. (1), 5. (7), 6. (4), 7. (2), 8. (5)

- **पाठ से आगे**

1. एक बार सड़क पर मेरा किसी व्यक्ति को भरा हुआ पर्स मिला, जिसमें पैसे और जरूरी कागज थे। आसपास पूछताछ करने पर उस व्यक्ति को मेरा पता चल गया। पर्स लौटाने पर मैंने उस व्यक्ति को धन्यवाद के साथ कुछ इनाम देना चाहा, पर पर्स लौटाने वाले व्यक्ति ने ऐसा करने के लिए मना कर दिया। यह घटना देखकर मुझे विश्वास हुआ कि अभी ईमानदारी बाकी है।
2. मेरे सपनों का भारत ऐसा होना चाहिए जहाँ ईमानदारी, परिश्रम और सच्चाई को न्याय व सम्मान मिल सके। सभी नागरिकों को समान अवसर प्राप्त हों, कोई गरीब व भूखा न रहे, सभी को शिक्षा एवं रोजगार मिले। कानून सबके लिए समान हो और उसका पालन निष्पक्ष रूप से हो। ऐसा भारत ही सच्चे अर्थों में विकसित और आदर्श राष्ट्र होगा।

- **भाषा आधारित**

1. (क) किसका रोजगार चलाने वाले फल–फूल रहे हैं?
   (ख) दरिद्रजनों की हीन अवस्था को दूर करने के लिए क्या बनाए गए हैं?
   (ग) लोग किससे लाभ उठाने में संकोच नहीं करते?
   (घ) बच्चे किसके लिए व्याकुल थे?
   (ङ) किसकी आवश्यकता नहीं है?
2. (क) आरोप और प्रत्यारोप
   (ख) धर्म से भय खाने वाला
   (ग) दरिद्र हैं जो जन
   (घ) मारना तथा पीटना
3. (क) धर्मभीरु (ख) आरोप–प्रत्यारोप
   (ग) टिकट बाबू (घ) कंडक्टर
4. (क) प्रति+आरोप (ख) सदा+एव
   (ग) रवि+इन्द्र (घ) वि+आकुल
5. (क) ईमान + दार = ईमानदार
   (ख) मूर्ख + ता = मूर्खता
   (ग) सच्चा + ई = सच्चाई
   (घ) आवश्यक + ता = आवश्यकता
6. (क) **श्रमजीवी** – श्रमपूर्वक जीवन जीने वाला।
   वाक्य प्रयोग – श्रमजीवी परिश्रम करके समाज का निर्माण करते हैं।
   (ख) **क्षोभ** – असंतोष
   वाक्य प्रयोग – अन्याय देखकर मेरे मन में क्षोभ उत्पन्न हुआ।
   (ग) **अवांछित** – अनैतिक
   वाक्य प्रयोग – परीक्षा में नकल करना अवांछित कार्य है।
   (घ) **कोटि** – करोड़
   वाक्य प्रयोग – महात्मा लोग धर्म निर्माण हेतु कोटि–कोटि प्रयास करते हैं।
   (ङ) **निर्जन** – जन रहित
   वाक्य प्रयोग – रात में निर्जन सड़कें डरावनी लगती हैं।

- **क्रियाकलाप आधारित**

1. ईमानदारी का फल (कहानी)

   एक बार की बात है, एक गाँव में हरि नाम का एक किसान रहता था। एक दिन उसे खेत जाते समय राह में सोने की थैली

मिली। वह चाहता तो उसे अपने पास भी रख सकता था, लेकिन उसने ईमानदारी दिखाते हुए वह थैली गाँव के मुखिया को सौंप दी। कुछ दिनों बाद थैली का असली मालिक मिला। मुखिया ने वह थैली उस मालिक को सौंप दी। मालिक हरि की ईमानदारी से बहुत प्रभावित हुआ। उसने हरि को पुरस्कारस्वरूप धन दिया। हरि की ईमानदारी के कारण उसका जीवन बदल गया।

सीख– ईमानदारी का फल मीठा होता है।

2. **दोषों का पर्दाफाश करने वाले समाचारों और कार्यक्रमों की सार्थकता**

   दोषों का पर्दाफाश करने वाले कार्यक्रम व समाचार समाज में जागरूकता फैलाते हैं। वे भ्रष्टाचार, अन्याय और अनैतिक कार्यों को उजागर करते हैं। इससे दोषी लोगों में भय उत्पन्न होता है तथा समाज सुधार की दिशा में आगे बढ़ता है। अत: ऐसे कार्यक्रम समाज के लिए अत्यन्त उपयोगी हैं।
3. छात्र स्वयं करें।
4. **हरिशंकर परसाई और हजारी लाल द्विवेदी की बस यात्रा**

   परसाई जी – अरे, द्विवेदी जी आपकी बस यात्रा कैसी रही।

   विवेदी जी – यात्रा कम, परीक्षा अधिक थी। लोग अच्छाई को भी बुराई के चश्मे से देखते हैं। मुझे विश्वास हो गया कि अभी ईमानदारी जीवित है।

   परसाई जी – बिल्कुल सही कहा। किन्तु, बस में चढ़ते ही धक्का-मुक्की के दर्शन होते हैं।

   द्विवेदी जी – सच कहा। बस यात्रा समाज का आईना है।

   परसाई जी – और सही अव्यवस्था मेरे व्यंग्य का विषय बन जाती है।

   द्विवेदी जी – आपकी लेखनी समाज को सोचने पर मजबूर कर देती है।

   परसाई जी – धन्यवाद! साहित्य का यही उद्देश्य है।

17. फूल और काँटे

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- छात्र स्वयं करें।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. फूल और काँटे।
2. दूसरों को कष्ट पहुँचाना काँटे का अवगुण है।
3. फूल का गुण है सुगंध प्रदान करना और दूसरों को सुकून देना।
4. काँटा सबकी आँखों में खटकता है।
5. फूल देवताओं के शीश पर शोभा देता है।

- **लिखित**

1. काँटा लोगों की उँगलियों को फाड़ देता है, तितलियों के पंख चीर देता है तथा भौंरों के शरीर को बेध देता है।
2. फूल तितलियों तथा भौंरों को अपना रस पिलाता है। सबके मन को भाता है तथा देवताओं के ऊपर चढ़ाया जाता है।
3. फूल सबको सुकून पहुँचाता है, जबकि काँटा दूसरों को कष्ट पहुँचाता है।
4. प्रकृति के तत्व– हवाएँ, बादल, चाँदनी तथा सूरज फूल और काँटे पर अपना प्रभाव डालते हैं।
5. आदमी की प्रशंसा उसके गुणों के कारण होती है।

- **प्रत्यास्मरण**

1. **संदर्भ व प्रसंग –** प्रस्तुत कविता 'फूल और काँटे' हमारी पाठ्यपुस्तक 'उमंग' से ली गई है। इसके रचयिता अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' जी हैं। इसमें फूल और

काँटे के माध्यम से व्यक्ति के स्वभाव का वर्णन किया गया है।

व्याख्या– कवि कहता है कि फूल और काँटा दोनों ही एक ही स्थान पर जन्म लेते हैं किन्तु दोनों के स्वभाव भिन्न-भिन्न हैं। काँटा अपने स्वभाववश सबको कष्ट पहुँचाता है। वहीं फूल अपने स्वभाव के कारण मंदिरों में चढ़ाया जाता है।

कवि फूल और काँटे का उदाहरण देते हुए कहता है कि अच्छे कुल में जन्म पा लेना बड़ी बात नहीं है। यदि किसी में अच्छाई का गुण नहीं है अर्थात् व्यक्ति जन्म से नहीं कर्म से बड़ा होता है।

- **अपनी समझ से**

1. (घ)
2. (ख)
3. (ख)
4. (क)
5. (ख)

- **सोच-समझकर**

1. 'फूल और काँटे' कविता से हमें यह संदेश मिलता है कि व्यक्ति जन्म से नहीं, बल्कि कर्म से बड़ा होता है। जो अच्छे कर्म करता है, सबका कल्याण करता है, उसकी समाज में पूजा होती है। जो गलत कार्य करता है, दूसरों को कष्ट पहुँचाता है, समाज उसकी निन्दा करती है।
2. कविता में फूल अच्छाई का प्रतीक है, जबकि काँटा बुराई का प्रतीक है। क्योंकि फूल अपने अच्छे गुणों के कारण सबको सुहाता है, जबकि काँटा अपने अवगुणों के कारण निन्दा पाता है।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. पंक्तियों का आशय : कवि कहता है कि व्यक्ति की बड़ाई उसके कर्मों से होती है, न कि उसके कुल से।
2. यह पंक्ति काँटे के स्वभाव को दर्शाती है। काँटा सबकी आँख में खटकता है अर्थात् दुर्जन समाज को कष्ट पहुँचाता है और सबके लिए परेशानी बन जाता है।
3. 'फूल और काँटे' एक ही पौधे पर एक ही वातावरण में पलते हैं फिर भी उनका स्वभाव भिन्न होता है। यह सिद्ध करता है कि परिस्थिति समान होने पर भी व्यक्ति का चरित्र अलग हो सकता है।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. हैं जनम लेते जगह में एक ही, <u>एक ही पौधा उन्हें है पालता</u>।
2. मेह उन पर है बरसता एक सा, <u>एक सी उन पर हवायें हैं बही</u>।
3. छेदकर काँटा किसी की उँगलियाँ, <u>फाड़ देता है किसी का वर बसन।</u>
4. फूल लेकर तितलियों को गोद में, <u>भौंर को अपना अनूठा रस पिला।</u>

- **सही-गलत**

1. (✓), 2. (✗), 3. (✓), 4. (✓), 5. (✗)।

- **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. मैं फूल के गुणों को अपनाना चाहूँगा। फूल सबको खुशी देता है, सुगंध फैलाता है और किसी को कष्ट नहीं पहुँचाता। लोग फूल को सम्मान देते हैं। अतः समाज में आदर करने के लिए फूल के गुणों को अपनाना ही श्रेष्ठ है।
2. यदि मुझे कुछ पौधे लगाने हों तो मैं नीम, तुलसी, आम तथा गुलाब के पौधे लगाऊँगा।
   - नीम और तुलसी के पौधे औषधीय गुणों से भरपूर होते हैं।
   - आम मधुर फल देता है।
   - गुलाब वातावरण को सुंदरता प्रदान करता है।

   देखभाल : मैं पौधों को नियमित पानी दूँगा। समय-समय पर खाद डालूँगा। पशुओं से उनकी सुरक्षा के लिए बाड़ लगाऊँगा।

- **भाषा आधारित**

1. (क) मैं विद्यालय जा रहा हूँ।
   (ख) वह अच्छा गाती है।
   (ग) हम सब मिलकर काम करेंगे।

(घ) यह मेरी पुस्तक है।

2. (क) चाँद – चंद्रमा, शशि
   (ख) हवा – वायु, पवन
   (ग) वसन – वस्त्र, चीर
   (घ) तन – शरीर, देह
   (ङ) गोद – अंक, हथेली
   (च) निराला – अनोखा, अनुपम
3. (क) रात - दिन
   (ख) श्याम - श्वेत
   (ग) सुगंध - दुर्गंध
   (घ) जन्म - मृत्यु
   (ङ) बड़प्पन - नीचपन
   (च) सुर – असुर
4. (क) बड़ा - बड़प्पन
   (ख) अनूठा - अनूठापन
   (ग) निराला - निरालापन
   (घ) पालना - पालन
   (ङ) बरसना - वर्षा, बरसात
   (च) चमकना - चमक, चमकीलापन
5. (क) अभि - अभिमान, अभिवादन
   (ख) अव - अवनति, अवगुण
   (ग) निर् - निर्भय, निर्मल
   (घ) प्रति - प्रतिदिन, प्रतिवर्ष
   (ङ) परि - परिवेश, परिक्रमा
   (च) अधि - अधिकार, अधिगम

- **क्रियाकलाप आधारित**

1. यदि पौधों को हवा, बारिश, धूप न मिले तो वे नीरस और बेकार होकर सूख जाएँगे। इससे प्रकृति असंतुलित हो जाएगी। सभी जीव-जंतुओं का आश्रय छिन जाएगा।
2. यदि सभी फूल एक ही रंग के एक ही सुगंध के हों तो प्रकृति उबाऊ लगने लगेगी। वातावरण का आकर्षण समाप्त हो जाएगा।
3. छात्र स्वयं करें।

18. तीन कहानियाँ : स्टीव जॉब्स

अभ्यास

उच्चारण आधारित

- छात्र स्वयं करें।

पाठ आधारित

- **मौखिक**

1. 'स्टेनफोर्ड' विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में।
2. केवल छह माह तक।
3. रीड कॉलेज से।
4. दूसरी कहानी का शीर्षक है - 'जीवन में कुछ पाना और खोना'।
5. मैकंतोश।

- **लिखित**

1. स्टीव जॉब्स ने पढ़ाई छोड़ने का निश्चय इसलिए किया क्योंकि उसे पढ़ाई की कोई उपयोगिता समझ में नहीं आई।
2. 'रीड कॉलेज' में सीखी 'कैलीग्राफी' स्टीव जॉब्स के द्वारा पहला कम्प्यूटर बनाने के काम आई।
3. एप्पल कंपनी से बाहर होने के बाद स्टीव जॉब्स ने 'नेक्स्ट' नामक कम्पनी की शुरुआत की।
4. जीवन और मृत्यु के बारे में स्टीव जॉब्स का विचार है कि जिन्दगी को ऐसे जीना चाहिए जैसे वह व्यक्ति की जिन्दगी का आखिरी दिन हो। मृत्यु के बारे में उनका विचार है कि मृत्यु वह स्थान है, जहाँ सभी को पहुँचना है और यही जीवन का सबसे बड़ा आविष्कार है। इसलिए जिन्दगी को व्यर्थ नहीं खोना चाहिए।
5. स्टीव जॉब्स अपने श्रोताओं के लिए यही कामना करते हैं कि आपमें कुछ कर गुजरने की ललक होनी चाहिए। सीखते समय स्वयं को अज्ञानी समझें तभी आप कुछ सीख पाएँगे।

- **प्रत्यास्मरण**

1. स्टीव जॉब्स ने तीन कहानियाँ सुनाईं।
2. स्टीव जॉब्स अपनी बातों को विस्तार से बताने के लिए क्षमा चाहते हैं।
3. जब हम स्वयं को अनजान समझेंगे तभी सीखने की क्षमता प्राप्त कर सकेंगे।
4. स्टीव जॉब्स के अनुसार कुछ कर गुजरने की ललक हमेशा बनी रहनी चाहिए।

- **अपनी समझ से**

1. (क)
2. (ख)
3. (घ)
4. (ग)
5. (ग)

- **सोच-समझकर**

1. व्यक्ति अपने बीते समय के आधार पर अपनी सफलता की कड़ियों को जोड़ सकता है। इसके लिए उसे अपने कर्म पर, अपनी क्षमता पर तथा अपनी जिंदगी पर विश्वास करना होगा।
2. इस कथन का आशय है कि व्यक्ति को अपने जीवन को एक बहुमूल्य क्षण समझना चाहिए और इस अवसर को व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिए। पूरे मन के साथ जीवन में कुछ कर दिखाने का प्रयत्न करना चाहिए।

- **पंक्तियों पर चर्चा**

1. इस पंक्ति में वक्ता का आत्मविश्वास झलकता है जिसका आशय है कि उसके द्वारा लिया गया निर्णय ही उसके जीवन का आधार है जो उसके द्वारा लिए गए फैसलों में महत्वपूर्ण है।
2. इस पंक्ति का आशय है कि हमें जीवन में जो समय मिला है, वह बहुत ही मूल्यवान है। जीवन के इस अवसर को व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिए।
3. इस पंक्ति का आशय है कि हमें अपनी जिंदगी के निर्णय स्वयं लेने चाहिए। जब हम स्वयं निर्णय लेकर आगे बढ़ेंगे तो पूर्ण आत्मविश्वास हमारे साथ होगा और हम अपने लक्ष्य तक सहज पहुँच सकेंगे।

- **रिक्त स्थान पूर्ति**

1. मैकंतोश
2. एप्पल
3. मृत्यु
4. 2005
5. तीन

- **सही-गलत**

1. (✓), 2. (✗), 3. (✗), 4. (✓), 5. (✓)।

- **सुमेलन**

1. (ग), 2. (घ), 3. (ङ), 4. (ख), 5. (क)।

- **पाठ से आगे (मन के विचार)**

1. हम अपने भविष्य की कड़ियाँ बीते हुए समय की शिक्षा, अनुभवों और अपनी लगन से जोड़ सकते हैं। बीते हुए समय से हम जो भी अच्छे अनुभव सीखते हैं, वे गुण हमारे आने वाले समय के लिए प्रेरणास्रोत बन जाते हैं।
2. मैं स्टीव जॉब्स के गुणों जैसे- जुनून, सरलता, असफलता से न डरना और नई सोच आदि को अपनाना चाहूँगा।
3. हाँ, मेरे विचार में यह कथन पूरी तरह सही है, इसके पीछे कुछ मुख्य कारण भी हैं, जैसे- परिवर्तन का माध्यम, समय की महत्ता और स्पष्टता आदि।

- **भाषा आधारित**

1. (क) स्टीव जॉब्स ने एप्पल की स्थापना की।

   (ख) स्टीव जॉब्स बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे।

   (ग) जॉन स्कली के साथ मतभेद शुरू हो गया।

   (घ) कंपनी के भविष्य को लेकर डर समा रहा था।

   (ङ) मेरी कहानियाँ समाप्त हुईं।

2. (क) पुस्तक + ईय = पुस्तकीय
   (ख) विश्व + इक = वैश्विक
   (ग) राष्ट्र + ईय = राष्ट्रीय
   (घ) भारत + ईय = भारतीय
   (ङ) विज्ञान + इक = वैज्ञानिक
   (च) भूत + इक = भौतिक
3. (क) अंतः + मन (विसर्ग संधि)
   (ख) विश्व + विद्यालय (विसर्ग संधि)
   (ग) दीक्षा + अंत (दीर्घ संधि)
   (घ) गौरव + अन्वित (दीर्घ संधि)
   (ङ) दुः + कर (विसर्ग संधि)
4. (क) दुनिया – संसार, विश्व
   (ख) मेहनत – परिश्रम, श्रम
   (ग) मृत्यु – मौत, अंत
   (घ) सुबह – सवेरा, प्रातः

- **क्रियाकलाप आधारित**

छात्र स्वयं करें।

जाँच प्रश्न-पत्र-1

1. प्रश्नों के उत्तर

(क) भाग्य पर भरोसा रखने वाले व्यक्तियों का जीवन अक्सर निष्क्रिय और प्रगतिहीन होता है। ऐसे लोग मेहनत करने के बजाय सब कुछ किस्मत पर छोड़ देते हैं, जिससे वे जीवन में आने वाले अवसरों का लाभ नहीं उठा पाते और अक्सर असफलता का सामना करते हैं।

(ख) प्रदर्शनी के लिए चित्र बनाने में कंचन की मदद उसके शिक्षक ने की थी। उन्होंने उसे सही रंगों के चयन, रेखांकन की बारीकियों को समझने और चित्र को आकर्षक बनाने में मार्गदर्शन देकर सहायता की।

(ग) जब यासुकी चान साधारण सीढ़ी से नहीं चढ़ पाया, तब तोत्तो चान ने हार नहीं मानी। वह चौकीदार के छप्पर से एक तिपाई सीढ़ी घसीटकर लाई। उसने अपनी पूरी शक्ति लगाकर उसे पेड़ के तने तक पहुँचाया ताकि वह स्थिर रहे और यासुकी चान सुरक्षित रूप से ऊपर चढ़ सके।

(घ) सच्ची मित्रता की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–
   1. मित्रों के बीच निःस्वार्थ प्रेम और गहरा विश्वास होता है।
   2. सच्चा मित्र कठिन समय और दुखों में हमेशा साथ खड़ा रहता है।
   3. वह अपने मित्र को गलत राह पर जाने से रोकता है।

(ङ) पाठ के नैतिक संदेश के अनुसार, हम अपने स्वाभिमान, कर्तव्यों और अपनी मातृभूमि का त्याग कभी नहीं कर सकते।

2. गद्यांश से पूछे गए प्रश्नों के उत्तर
   1. जब लेखक ने उससे क्रोध में कहा कि उसकी माँ की अंतिम घड़ी समीप होने पर भी वह खेल दिखाने चला आया, तब वह अपमान का अनुभव कर रहा था।
   2. लेखक ने क्रोध में छोटे जादूगर से कहा– "तब भी तुम खेल दिखाने चले आए।"
   3. छोटे जादूगर के मुँह पर परिचित तिरस्कार की रेखा (भाव) थी।
   4. गद्यांश के अनुसार, मनुष्य किसी के सुख-दुख की तुलना अपने ही पैमाने (माप) से करता है।
3. **विकल्प के सही उत्तर–** 1. (घ), 2. (क), 3. (ख), 4. (क), 5. (घ)।
4. **पंक्तियों की रिक्त पूर्ति**
   (क) प्रदर्शक, (ख) स्वागत, (ग) फूलों, (घ) काम, (ङ) बस्ती।

5. **सत्य-असत्य**

(क) (5), (ख) (3), (ग) (5), (घ) (3)।

6. **विलोम शब्द**

कायर, रात, मृत्यु/मरण, अपमान, असत्य।

7. **संधि-विच्छेद–**

(क) हिम+आलय, (ख) विद्या+आलय, (ग) महा+ईश्वर, (घ) पुस्तक+आलय, (ङ) गिरि+ईश

8. **पर्यायवाची–**

(क) नदी – सरिता, तटिनी

(ख) पुत्र – बेटा, सुत

(ग) आकाश – नभ, गगन

(घ) फूल – पुष्प, कुसुम

(ङ) जीवन – जिंदगी, प्राण

जाँच प्रश्न-पत्र-2

1. प्रश्नों के उत्तर

(क) अंकित और उसके माता-पिता ने ताजी गिरी बर्फ के साथ खेलकर, एक-दूसरे पर बर्फ के गोले फेंककर और सुंदर बर्फीले दृश्यों का लुत्फ उठाकर बर्फबारी का आनंद लिया।

(ख) जब मनोहर ने सुरबाला का भाड़ (मिट्टी का घरौंदा) नष्ट कर दिया, तो वह बहुत दुखी हुई और उसकी आँखों में आँसू आ गए।

(ग) लेखिका ध्यान खींचने के लिए गिल्लू उनके पैर तक आकर सर्र-से परदे पर चढ़ जाता और फिर उसी तेजी से नीचे उतरता था। वह कभी-कभी लेखिका की थाली के पास बैठकर चावल का एक-एक दाना सफाई से खाता था।

(घ) कवि माँ सरस्वती से प्रार्थना कर रहा है कि वे भारत की नूतन वीणा में 'नवीन स्वर' या 'नया संगीत' भर दें, जिससे पूरे देश में नव चेतना का संचार हो।

(ङ) दीवान सुजानसिंह के चरित्र की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

1. **अनुभवी–** उन्हें जीवन और प्रशासन का गहरा अनुभव था।
2. **पारखी–** वे इंसान के असली गुणों और साहस को पहचानने की अद्भुत क्षमता रखते थे।
3. **कर्तव्यनिष्ठ–** वे अपने पद और राज्य के प्रति पूरी तरह समर्पित थे।
4. **धैर्यवान–** उन्होंने बहुत ही धैर्य और बुद्धिमानी से अपने उत्तराधिकारी का चयन किया।

2. **पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या**

संदर्भ एवं प्रसंग– यह पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'तरंग' के पाठ 'फूल और काँटे' से ली गई हैं। इसके रचयिता अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' हैं। इन पंक्तियों में कवि ने स्पष्ट किया है कि मनुष्य का व्यवहार और उसके गुण ही समाज में उसका स्थान तय करते हैं, न कि उसका ऊँचा कुल।

व्याख्या– कवि कहते हैं कि एक ही पौधे पर जन्म लेने के बावजूद, काँटा अपनी चुभने वाली प्रकृति के कारण सबकी आँखों में खटकता है और लोग उसे पसंद नहीं करते हैं। वहीं दूसरी ओर फूल अपनी कोमलता और सुगंध के कारण देवताओं के सिर (शीश) पर सुशोभित होता है और सबका प्रिय बनता है।

कवि अंत में यह गहरा संदेश देते हैं कि यदि किसी व्यक्ति के स्वभाव या चरित्र में 'बड़प्पन' (महानता) की कमी है, तो उसका ऊँचे कुल (खानदान) में जन्म लेना व्यर्थ है।

कवि का कहने का तात्पर्य है कि व्यक्ति अपने अच्छे गुणों और श्रेष्ठ कर्मों से ही सम्मान पाता है, केवल ऊँचे वंश में जन्म लेने से कोई बड़ा नहीं कहलाता।

3. **सही विकल्प**– 1. (क), 2. (ख), 3. (ख), 4. (घ), 5. (ग)

4. **पंक्तियों का आशय**–

(1) इस पंक्ति का अर्थ है कि वक्ता को पहली बार प्रकृति और बदलते मौसमों के असली आनंद और सुंदरता का अनुभव हुआ है। इससे पहले उसने कभी ऋतुओं के बदलते स्वरूप और उनसे मिलने वाली खुशी को इतने करीब से महसूस नहीं किया था।

(2) इस पंक्ति का तात्पर्य है कि यहाँ 'भाड़' (मिट्टी का चूल्हा या ढाँचा) का टूटना किसी लक्ष्य की प्राप्ति या किसी बँधन से मुक्ति का प्रतीक हो सकता है। उस संरचना के टूटते ही सुरबाला के मन में इतनी अधिक खुशी हुई कि वह झूम उठी और नाचने लगी। यह उसकी असीम प्रसन्नता को दर्शाता है।

(3) यह एक दार्शनिक और भावुक पंक्ति है जो मृत्यु को दर्शाती है। इसका अर्थ है कि जैसे ही सुबह की पहली किरण फूटी, उस प्राणी का इस संसार से अंत हो गया (वह सो गया)। "दूसरे जीवन में जागने" का अर्थ है कि उसकी आत्मा ने इस शरीर को त्यागकर परलोक या किसी अन्य योनि में प्रस्थान कर लिया है।

(4) इस पंक्ति का आशय नव-निर्माण और आशा से है। कवि यहाँ यह संदेश दे रहे हैं कि चाहे परिस्थितियाँ कितनी भी प्रतिकूल क्यों न हों या अतीत में विनाश हुआ हो, हमें हार नहीं माननी चाहिए। हमें फिर से साहस जुटाकर एक नई और बेहतर रचना या समाज का निर्माण करना चाहिए। यह निरंतर प्रयास और सृजनशीलता का प्रतीक है।

(5) यह एक रूपक है। हिंदी साहित्य में 'बगुला' अक्सर पाखंड, छल और बाहरी दिखावे का प्रतीक माना जाता है, जबकि 'हंस' विवेक, ज्ञान और सच्चाई का प्रतीक है।

इस पंक्ति का आशय यह है कि इस संसार में जहाँ चारों ओर दिखावा करने वाले या कपटी लोग (बगुले) भरे हुए हैं, वहाँ असली गुणवान, विवेकी और सच्चा इंसान (हंस) कौन है और वह कहाँ छिपा है? यह पंक्ति भीड़ में छिपी असलियत और अच्छाई को पहचानने की चुनौती पेश करती है।

5. **गद्यांश में उचित विराम चिह्न**

युवक ने हँसकर कहा, "अब मुझे कुछ इनाम देते हो?" किसान ने गंभीर भाव से कहा, "नारायण चाहेंगे तो दीवानी आपको ही मिलेगी।" युवक ने किसान की तरफ गौर से देखा। उसके मन में एक संदेह हुआ, क्या यह सुजानसिंह तो नहीं हैं? आवाज मिलती है, चेहरा-मोहरा भी वही। किसान ने भी उसकी ओर तीव्र दृष्टि से देखा। शायद उसके दिल के संदेह को भाँप गया। मुस्कराकर बोला, "गहरे पानी में पैठने से ही मोती मिलता है।"

अन्ततः परीक्षा का महीना पूरा हुआ। चुनाव के परिणाम का दिन आ पहुँचा।

उम्मीदवार प्रातःकाल से ही अपनी किस्मत का फैसला सुनने के लिए उत्सुक थे। दिन काटना पहाड़ हो गया। प्रत्येक चेहरे पर आशा और निराशा के रंग आते थे। नहीं मालूम, आज किसके नसीब जागेंगे। न जाने किस पर लक्ष्मी की कृपादृष्टि होगी।

6. **विग्रह पदों का समास**

शक्ति अनुसार, जीवन भर, राजा का कुमार, महान है जो आत्मा, पाँच वटों (वृक्षों) का समूह

7. **उपसर्ग एवं मूल शब्द**

उपसर्ग	**मूल शब्द**
अप	मान
परा	जय
निर	अंजन
अति	आचार
अध	पका

8. **संधि-विच्छेद**

प्रति + आरोप, रवि + इंद्र,
सदा + एव, वि + आकुल

9.

प्रत्यय	**नया शब्द**
लय/ईय	पुस्तकालय/पुस्तकीय
ईय	विश्वीय
ईय	राष्ट्रीय
ईय	भारतीय
इक	वैज्ञानिक